सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 44, नई दिल्ली । शुक्रवार, 26 अप्रैल 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

लहरों के डर से नौका
कभी पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की
कभी हार नहीं होती।

03 26 अप्रैल को नहीं होगा मेयर का चुनाव
06 संस्कृतिविहीन और पथभ्रष्ट होता हिमाचली युवा
08 28 तारीख को राहुल गांधी कटक आएंगे

गुड़गांव से फ़रीदाबाद टोल रोड : एक यातायात दुःस्वप्न सामने आया

परिवहन विशेष

हलचल भरी गुड़गांव से फ़रीदाबाद टोल रोड पर 25 अप्रैल, 2024 को अफरा-तफरी मच गई, जब एक लोडेड डंपर ट्रक बुरी तरह ख़राब हो गया, जिससे डंप यार्ड के पास सड़क का पूरा हिस्सा रुक गया। इसके बाद जो हुआ वह सिर्फ ट्रैफिक जाम नहीं था, बल्कि यात्रियों के लिए एक कष्टदायक परीक्षा और अधिकारियों के लिए अनुत्तरित प्रश्नों की एक श्रृंखला थी।

जैसे ही दोपहर हुई, भारी कचरा कण से लदा डंपर, एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सका, एक अचल बाधा बन गया और हजारों वाहनों को अपनी चपेट में ले लिया। तेज हॉर्न और निराश मोटर चालकों के शोर के बीच, कई जरूरी सवाल उभर कर सामने आए, जो जिम्मेदार अधिकारियों से तत्काल जवाब की मांग कर रहे थे।

सुरक्षा निरीक्षण: पहला और सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह उठाया गया कि इतने भारी भरकम वाहनों को सड़क पर चलने की अनुमति क्यों दी गई, जबकि वे क्रेन द्वारा भी ले जाने में असमर्थ थे? सुरक्षा नियमों में यह स्पष्ट निरीक्षण भविष्य में इसी तरह की घटनाओं को रोकने के लिए तत्काल सुधार की मांग करता है।

टोल प्लाजा पहेली: जैसे-जैसे ट्रैफिक जाम टोल प्लाजा तक बढ़ता गया, एक हैरान करने वाला परिदृश्य सामने आया - टोल संग्रह बेरोकटोक जारी रहा। इससे टोल अधिकारियों और ऑन-ग्राउंड ट्रैफिक प्रबंधन के बीच समन्वय की कमी के बारे में चिंताएं बढ़ गईं, जिससे फंसे हुए यात्रियों की परेशानियां बढ़ गईं।

प्रशासनिक अंतर: ऐसी आपात स्थितियों से निपटने में फ़रीदाबाद और गुड़गांव प्रशासन के बीच स्पष्ट अंतर जांच के दायरे में आया। गंभीर घटनाओं के समाधान के लिए एकीकृत प्रोटोकॉल की अनुपस्थिति यात्रियों पर प्रभाव को बढ़ाती है और बेहतर अंतर-विभागीय समन्वय की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

प्रवर्तन चूक: बार-बार अनुवर्ती कार्रवाई और मीडिया रिपोर्टों के बावजूद व्यस्त कार्यालय समय के दौरान Toll Road की भेद्यता को उजागर करने के बावजूद, संकट के दौरान पर्याप्त प्रवर्तन तैनाती की अनुपस्थिति स्पष्ट थी। यह सक्रिय यातायात प्रबंधन और कानून प्रवर्तन में प्रणालीगत विफलताओं की ओर इशारा करता है।

निवारक उपाय: आगे देखते हुए, भविष्य में इसी तरह के यातायात दुःस्वप्न को रोकने के लिए सुधारात्मक और निवारक कार्रवाइयों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। सख्त वाहन निरीक्षण प्रोटोकॉल लागू करने से लेकर आपातकालीन प्रतिक्रिया तंत्र को बढ़ाने तक, ऐसी घटनाओं को कम करने के लिए सक्रिय उपायों की तत्काल आवश्यकता है।

कड़े प्रवर्तन का आह्वान: टोल रोड पर 2024 के सबसे खराब ट्रैफिक जाम में से एक के रूप में वर्णित, यह घटना कड़े प्रवर्तन उपायों की तात्कालिकता को रेखांकित करती है। केवल यातायात नियमों को मजबूती से लागू करके ही इस महत्वपूर्ण परिवहन मार्ग पर यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित की जा सकती है।

गुड़गांव से फ़रीदाबाद टोल पर एक लोडेड डंपर के खराब होने से लगा भारी ट्रैफिक जाम अधिकारियों और हितधारकों के लिए खतरे की घंटी है। यह ऐसे बुरे सपनों की पुनरावृत्ति को रोकने और यात्रियों के लिए सुगम और सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय सुरक्षा उपायों, निर्बाध समन्वय और कड़े प्रवर्तन की अनिवार्यता पर प्रकाश डालता है।

सड़क सुरक्षा पाठशाला : गुड़गांव फ़रीदाबाद टोल - "सड़क किनारे मवेशी सड़क सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा करते हैं"

परिवहन विशेष

सड़क सुरक्षा के लिए एक चिंताजनक विकास में, सड़क किनारे मवेशी हमारी सड़कों पर एक महत्वपूर्ण खतरा बन गए हैं, जो मोटर चालकों और पैदल यात्रियों दोनों को समान रूप से खतरे में डाल रहे हैं। रोजाना होने वाले चौंका देने वाले लेन-देन के बावजूद, इन कमजोर जानवरों के लिए समर्थन या हस्तक्षेप की भारी कमी बनी हुई है।

सड़कों के किनारे बिखरे कूड़े-कचरे के बीच सफाई करते हुए पाए जाने वाले अनगिनत मवेशी कुपोषण और पाचन संबंधी समस्याओं से पीड़ित हैं, जो उनके सूजे हुए पेट से स्पष्ट है। यह गंभीर स्थिति न केवल इन जानवरों की उपेक्षा को उजागर करती है, बल्कि जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा तत्काल कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता को भी रेखांकित करती है।

इन आवारा मवेशियों की मौजूदगी सार्वजनिक सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा करती है, इन भटकते जानवरों के साथ टकराव के कारण कई दुर्घटनाएँ होती हैं। ऐसी घटनाओं से न केवल वाहनों को नुकसान होता है बल्कि मानव जीवन के लिए भी गंभीर खतरा पैदा होता है।

यह जरूरी है कि संबंधित अधिकारी इस बढ़ते खतरे से निपटने के लिए निर्णायक कदम उठाएं। सड़कों से आवारा मवेशियों को हटाने और उन्हें उचित देखभाल और आश्रय प्रदान करने के लिए प्रभावी उपाय लागू किए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, समुदायों को जिम्मेदार पशु स्वामित्व के महत्व और मवेशियों को सड़कों पर स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति देने से जुड़े खतरों के बारे में शिक्षित करने के लिए जन जागरूकता अभियान शुरू किया जाना चाहिए।

इस मुद्दे का तुरंत समाधान करने में विफलता न केवल जानवरों की पीड़ा को बढ़ाती है बल्कि सभी सड़क उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा और भलाई को भी खतरे में डालती है। अब समय आ गया है कि सुरक्षित सड़कें सुनिश्चित की जाएं और सड़क किनारे मौजूद हमारे साथियों के साथ अधिक मानवीय व्यवहार किया जाए।

(सड़क सुरक्षा ओमनी फाउंडेशन)

लेह-मनाली नेशनल हाईवे अब वाहनों की आवाजाही के लिए खुला, जानें डिटेल्स

428 किलोमीटर लंबा लेह-मनाली राष्ट्रीय राजमार्ग अब वाहनों की आवाजाही के लिए खुल गया है। बॉर्डर रोड ऑर्गनाइजेशन ने सर्दियों के मौसम में भारी हिमपात के कारण लगभग पांच महीने तक बंद रहने के बाद नेशनल हाईवे को वाहनों की आवाजाही के लिए फिर से खोल दिया है।

नई दिल्ली। 428 किलोमीटर लंबा लेह-मनाली राष्ट्रीय राजमार्ग अब वाहनों की आवाजाही के लिए खुल गया है। जानकार सूत्रों के अधिकारियों ने कहा कि सीमा सड़क संगठन (बॉर्डर रोड ऑर्गनाइजेशन) ने सर्दियों के मौसम में भारी हिमपात के कारण लगभग पांच महीने तक बंद रहने के बाद नेशनल हाईवे को वाहनों की आवाजाही के लिए फिर से सफलतापूर्वक खोल दिया है। यह हाईवे हिमाचल प्रदेश के रास्ते केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने वाला महत्वपूर्ण वैकल्पिक मार्ग है। रिपोर्टों के अनुसार, इस महत्वपूर्ण सड़क को सर्दियों के आगमन और बर्फ जमा होने के साथ नवंबर में बंद कर दिया गया था। रक्षा क्षेत्र से लेह में स्थित एक प्रवक्ता ने पुष्टि की कि सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा किए गए व्यापक बर्फ हटाने के अभियान के पूरा होने के बाद सड़क अब फिर से वाहनों के लिए सुलभ है। रिपोर्टों में कहा गया है कि इस विशाल कार्य में लद्दाख में परियोजना हिमांक के तहत 111 सड़क निर्माण कंपनी (आरसीसी) और 753 सीमा सड़क कार्य बल (बीआरटीएफ) के समन्वित प्रयासों के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश में परियोजना दीपक के तहत 70 आरसीसी और 38 बीआरटीएफ शामिल थे।

पर्वतीय मार्गों पर रोडवेज का सफर होगा सुहाना... 130 नई बसों की खरीद के लिए ऑर्डर जारी

केवल पर्वतीय मार्गों पर संचालन के लिए ही 130 बसें खरीदी जा रही हैं। टेंडर के बाद वर्क ऑर्डर जारी किया जा चुका है।

परिवहन विशेष न्यूज

देहरादून। उत्तराखंड के पर्वतीय मार्गों पर रोडवेज का सफर और सुहावना होने जा रहा है। परिवहन निगम 130 नई बसें खरीद रहा है, जिनकी आवक जून माह से शुरू हो जाएगी। परिवहन निगम ने करीब डेढ़ साल पहले पर्वतीय मार्गों पर 130 नई बसों के संचालन के लिए प्रक्रिया शुरू की थी। इसके तहत निगम ने टेंडर भी निकाला था, लेकिन कुछ तकनीकी नियमों की वजह से केवल एक कंपनी आई थी। लिहाजा परिवहन निगम ने टेंडर रद्द कर दिया था। इस बीच परिवहन मुख्यालय ने नियमों में कुछ संशोधन कर दिए। इसके बाद परिवहन निगम ने नए सिरे से टेंडर प्रक्रिया की है।

परिवहन निगम के महाप्रबंधक संचालन एवं तकनीकी दीपक जैन ने बताया, केवल पर्वतीय मार्गों पर संचालन के लिए ही 130 बसें खरीदी जा रही हैं। टेंडर के बाद वर्क ऑर्डर जारी किया जा चुका है। बताया, जून माह में इन बसों की डिलीवरी शुरू हो जाएगी। माना जा रहा कि जून से आगामी तीन माह में पर्वतीय मार्गों पर बसों की किल्लत कम हो जाएगी। परिवहन निगम ने कई नए रूट भी चिह्नित किए हैं, जिन पर भविष्य में बस संचालन किया जाएगा।

लगातार घट रहा है निगम का बस बेड़ा

परिवहन निगम का बस बेड़ा लगातार घटता जा रहा है। जो रोडवेज बसें अपनी आयु पूरी कर रही हैं, निगम उन्हें संचालन से हटा रहा है। लिहाजा निगम को ज्यादा संख्या में नई व बीएस-6 वाली बसों की दरकार है। निगम नई बसें कम खरीद रहा है। इसके बजाए निगम अनुबंधित बसों पर फोकस कर रहा है।

सीमेंट डंपर फ़रीदाबाद और गुरुग्राम में सड़क सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा करते हैं

परिवहन विशेष न्यूज

फरीदाबाद। हाल के महीनों में, फ़रीदाबाद और गुरुग्राम की सड़कें सुरक्षा के लिए युद्ध का मैदान बन गई हैं, जहां सीमेंट के डंपर पहले से ही भीड़भाड़ वाले मार्गों पर कहर बरपा रहे हैं। निर्माण मिश्रण से लदे ये भारी-भरकम वाहन विनाश का निशान छोड़ रहे हैं क्योंकि उनका माल सड़कों पर फैल जाता है, जिससे व्यापक क्षति होती है और मोटर चालकों का जीवन खतरे में पड़ जाता है।

समस्या यहीं ख़त्म नहीं होती. यातायात नियमों की घोर अवहेलना करते हुए, इन सीमेंट डंपरों को अक्सर नो-एंट्री जोन से गुजरते हुए देखा जाता है, जिससे यात्रियों के लिए जोखिम और बढ़ जाता है।

इस लापरवाही के परिणाम गंभीर हैं. यात्रियों को दुर्घटनाओं और उनके वाहनों के क्षतिग्रस्त होने का खतरा बढ़ जाता है, जबकि अधिकारियों को क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत के विशाल कार्य से जूझना पड़ता है।

निवासी और यात्री समान रूप से इस खतरे पर लगाम लगाने के लिए संबंधित अधिकारियों से तत्काल कार्रवाई की मांग कर रहे हैं, इससे पहले कि और जान जोखिम में पड़ जाए। यह जरूरी है कि सीमेंट डंपरों की आवाजाही को नियंत्रित करने और उल्लंघन करने वालों के लिए सख्त दंड लागू करने के लिए कड़े उपाय किए जाएं।

अब कार्रवाई करने का समय आ गया है, इससे पहले कि स्थिति और अधिक नियंत्रण से बाहर हो जाए और हमारी सड़कों की सुरक्षा एक अप्राप्य सपना बन जाए।

पर्यावरण पाठशाला : हरे रंग के संरक्षकों का सम्मान- एक आभार लेख : अंकुर

हमारे शहरी परिदृश्य की हलचल भरे माहोल में, कंक्रीट और स्टील के बीच, शांति और जीवन का एक मूक प्रहरी खड़ा है - सड़क के किनारे का विनम्र पेड़। ये हरे-भरे संरक्षक न केवल हमारी सड़कों को अपनी सुंदरता से सुशोभित करते हैं, बल्कि हमारे शहरों के लिए महत्वपूर्ण फेफड़ों के रूप में भी काम करते हैं, जिस हवा में हम सांस लेते हैं उसे शुद्ध करते हैं और अनगिनत प्राणियों को आश्रय प्रदान करते हैं।

फिर भी, अक्सर, इन मूक प्रहरियों को उपेक्षा और उपेक्षा का सामना करना पड़ता है, उनकी शाखाओं को बेतरतीब ढंग से काट दिया जाता है, उनकी भलाई की अनदेखी की जाती है। लेकिन हाल के दिनों में, एक खूबसूरत पहल सामने आई है, जो हमारे शहरी जंगलों के लिए आशा की किरण है।

प्रूनिंग कैंची और लोपर चलाने वाले गुमनाम नायकों, ज्ञान और देखभाल से लैस समर्पित टीमों के प्रति, हम अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। आपके प्रयासों पर किसी का ध्यान नहीं गया।

सावधानीपूर्वक परिशुद्धता और पर्यावरण के प्रति वास्तविक चिंता के साथ, आपने पेड़ों की छंटाई के कार्य को एक कला के रूप में बदल दिया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि एक भी शाखा भटकी हुई नहीं है, एक भी पत्ता गलत जगह पर नहीं है। हरी-भरी गलियों से लेकर अन्य शहरों की हलचल भरी सड़कों तक, आपका काम कर्तव्यनिष्ठ प्रबंधन की शक्ति के प्रमाण के रूप में खड़ा है। अपने कार्यों के माध्यम से, आप हमें प्रकृति के साथ हमारे गहरे संबंध और उसके पोषण और सुरक्षा की हमारी जिम्मेदारी की याद दिलाते हैं।

हम उन गुरूग्राम नगरपालिका अधिकारियों की हार्दिक सराहना करते हैं, जिन्होंने जिम्मेदार शहरी वानिकी के इस दृष्टिकोण को अपनाया है। इन प्रयासों के लिए आवश्यक संसाधन और समर्थन प्रदान करने की आपकी प्रतिबद्धता आने वाली पीढ़ियों के लिए हरित, स्वस्थ समुदाय बनाने के प्रति आपके समर्पण का प्रमाण है।

आइए हम उन नागरिकों के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करें जिन्होंने इन प्रयासों का समर्थन और समर्थन किया है। आपकी जागरूकता और वकालत पर्यावरणीय प्रबंधन की संस्कृति को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने में सहायक रही है कि पेड़ों की उचित देखभाल के महत्व को नजरअंदाज न किया जाए। आइए हम सब मिलकर हरियाली के इन संरक्षकों का जश्न मनाना और उनका समर्थन करना जारी रखें, क्योंकि वे हमें याद दिलाते हैं कि शहरी जंगल के बीच भी, प्रकृति की सुंदरता कायम है। आइए हम एक ऐसी दुनिया के लिए प्रयास जारी रखकर उनके समर्पण और प्रतिबद्धता का सम्मान करें जहां हर पेड़ ऊंचा खड़ा हो और हर पत्ता हवा में नाचता हो, एक ऐसी दुनिया जहां प्रकृति और मानवता साथ-साथ चलें। उनके अथक प्रयासों में, हमें आशा, प्रेरणा और एक हरित, अधिक टिकाऊ कल का वादा मिलता है।

indiangreenbuddy@gmail.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

रंक को राजा बनाने वाले शनिदेव जी महाराज

एक समय सूर्यदेव जब गर्भाधान के लिए अपनी पत्नी छाया के समीप गए तो छाया ने सूर्य के प्रचंड तेज से भयभीत होकर अपनी आंखें बंद कर ली थीं। कालांतर में छाया के गर्भ से शनिदेव का जन्म हुआ। शनि के श्याम वर्ण को देखकर सूर्य ने अपनी पत्नी छाया पर यह आरोप लगाया कि शनि मेरा पुत्र नहीं है तभी से शनि अपने पिता सूर्य से शत्रुता रखते हैं और इसी कारण इन दोनों की कभी नहीं बनी। शनिदेव ने अनेक सालों तक भूखे-प्यासे रहकर शिव आराधना की और घोर तपस्या से अपने शरीर को और जला लिया, तब शनिदेव की भक्ति से प्रसन्न होकर शिवजी ने शनिदेव से वरदान मांगने को कहा।

तब शनिदेव ने शिव जी से प्रार्थना कर के कहा की युगों-युगों से मेरी मां छाया की पराजय होती रही है, मेरी माता को मेरे पिता सूर्य द्वारा बहुत अपमानित और प्रताड़ति किया गया है इसलिए मेरी माता की इच्छा है कि मैं अपने पिता से भी ज्यादा शक्तिशाली व पूज्य बनूं और उनके अहंकार को तोड़ सकूं।

इसी बात पर शिव जी ने उन्हें वरदान देते हुए कहा कि वत्स नवग्रहों में तुम्हारा स्थान सर्वश्रेष्ठ रहेगा। तुम पृथ्वीलोक के न्यायाधीश व दंडाधिकारी रहोगे तुम ही लोगों को उनके कर्मों की सजा देकर न्याय के दवता कहलाओगे। सिर्फ इतना ही नहीं साधारण मानव तो क्या देवता, असुर, सिद्ध, विद्याधर और नाग भी तुम्हारे नाम से भयभीत होंगे।

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार शनिदेव कश्यप गोत्रीय हैं तथा सौराष्ट्र उनका जन्मस्थल माना जाता है।

मत्स्य पुराण में महात्मा शनि देव का शरीर इन्द्र कांति की नीलमणि जैसी है, वे गिद्ध पर सवार है, हाथ मे धनुष बाण है एक हाथ से वर मुद्रा भी है, शनि देव का विकराल रूप भयावना भी है। शनि पापियों के लिए हमेशा ही संहारक हैं। पश्चिम के साहित्य मे भी अनेक आख्यान मिलते हैं, भारत में शनि देव के अनेक मंदिर हैं, जैसे शिंगणापुर, वृंदावन के कोकिला वन, ग्वालियर के शनिश्चराजी, दिल्ली तथा अनेक शहरों मे महाराज शनि के मंदिर हैं।

जय शनि देव

भगवान शिव ने दिया था द्रौपदी को पांच पतियों का वरदान, जानिए क्यों श्रीकृष्ण ने चुकाया कर्ज

संपूर्ण भारतवर्ष में आदर्श माने जाने वाले महाभारत और रामायण की गाथा से स्त्रियों की शक्तियों का बोध होता है। भगवान शिव ने तपस्या से प्रसन्न होकर द्रौपदी को पांच पतियों का आशीर्वाद दिया था।

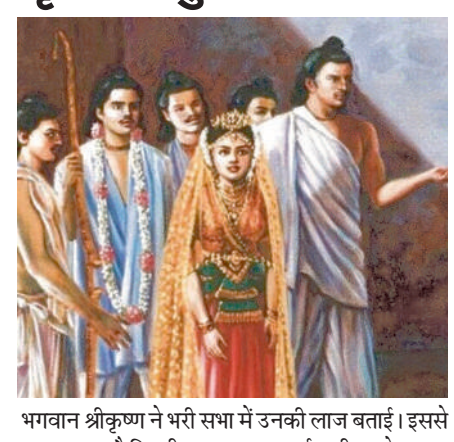

महाभारत काल की द्रौपदी पूर्वजन्म में एक ऋषि कन्या थी। उन्होंने भगवान शिव की घोर तपस्या की थी।

जब भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिया तो द्रौपदी ने पांच बार कहा कि सर्वगुणसंपन्न पति चाहती हैं। इसलिए भगवान शिव ने उनकी इच्छा पूरी कर दी। भगवान शिव ने कहा कि अगले जन्म में द्रौपदी को पांच भारतवंशी पति प्राप्त होंगे। क्योंकि उसने पांच बार पति को पाने की कामना दोहरायी थी। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको द्रौपदी के बारे में कुछ अनकहे रहस्यों के बारे में बताने जा रहे हैं।

संपूर्ण भारतवर्ष में आदर्श माने जाने वाले महाभारत और रामायण की गाथा से स्त्रियों की शक्तियों का बोध होता है। इन ग्रंथों में सीता और द्रौपदी जैसी दिव्य स्त्रियों का चरित्र अन्य महिलाओं को साहसी, धैर्यवान और आत्मविश्वासी बनने की प्रेरणा देता है। रामायण व महाभारत का युद्ध स्त्रियों के सम्मान के लिए किया गया था। जिसमें बुराई का अंत और सत्य की विजय हुई।

कौन थी द्रौपदी

पूर्वजन्म में द्रौपदी ऋषि कन्या थी। जिसके पति पाने के लिए भगवान शिव की घोर तपस्या की थी। उन्होंने भगवान शिव से पांच बार कहा कि वह सर्वगुणसंपन्न पति चाहती हैं। इसलिए भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर उसकी मनोकामना को पूरा करने का वरदान दिया। भगवान शिव ने कहा कि उनको अगले जन्म में पांच भारतवंशी पति प्राप्त होंगे। क्योंकि उसने पांच बार पति पाने की कामना दोहराई थी।

श्रीकृष्ण ने चुकाया कर्ज

आपको बता दें कि द्रौपदी के पुण्यफलों के कारण भगवान श्रीकृष्ण ने भरी सभा में उनकी लाज बताई। इससे बता चलता है कि जीवन का पुण्य कर्म मुसीबत के समय काम आता है। बताया जाता है कि एक बार द्रौपदी गंगा में स्नान कर रही थीं, तभी एक महात्मा भी वहां स्नान के लिए आए। इस दौरान महात्मा का लंगोट पानी में बह गया। जिसके कारण वह पानी से बाहर निकलने में असक्षण थे। तब द्रौपदी ने महात्मा की सहायता के लिए अपनी साड़ी से लंगोट भर का कपड़ा फाड़कर दे दिया। जिसके बाद महात्मा ने द्रौपदी को आशीर्वाद दिया था।

वहीं एक अन्य कथा के मुताबिक जब भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया था, तो उस दौरान श्रीकृष्ण की उंगली कट गई थी। तब द्रौपदी ने अपनी साड़ी फाड़कर भगवान श्रीकृष्ण की उंगली पर बांधा था। इस कर्म के बदले भगवान श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को आशीर्वाद देते हुए कहा था कि वह एक दिन इस साड़ी की कीमत अदा करेंगे। द्रौपदी के इन्हीं पुण्यकर्मों को श्रीकृष्ण ने चीरहरण के दौरान उसे ब्याज सहित लौटा दिया। जिससे द्रौपदी की लाज बच गई।

स्वस्थ, हृष्ट पुष्ट रहने के लिए पानी का अधिक मात्रा मे सेवन क्यों आवश्यक है ? जाने सरल भाषा में

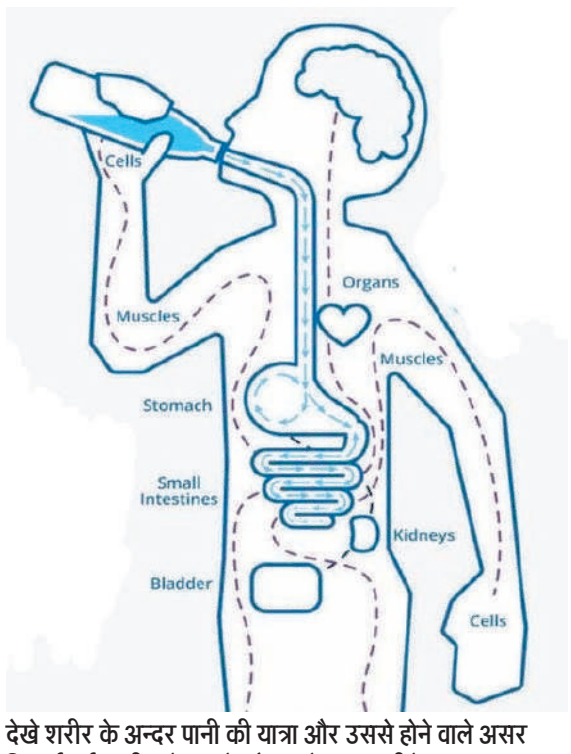

देखे शरीर के अन्दर पानी की यात्रा और उससे होने वाले असर दिखाई गई तस्वीर से समझे और जाने स्वस्थ जीने का आधार

बहुत लोग पानी कम पीते हैं और अनगिनत बीमारियों के शिकार बने रहते हैं I हम आज आपकों बता रहे है हमारे शरीर में पानी कैसे यात्रा/भ्रमण करता है और इसके कितने फायदे हैं I

1.शरीर हाइड्रेटेड रहता है I
2.वजन कम करने में मदद मिलती है I
3.स्किन के लिए अच्छा और डी-टॉक्सीकेशन करता है I
4.इनडाइजेशन में गुनगुना पानी अच्छा, मेटाबॉलिज्म मजबूत I
5.सिर दर्द दूर करेगा, बालों को हेल्दी रखेगा I
6.इम्युनिटी बूस्टर और भूख लगने में मदद मिलती हैI
7.यह बॉडी टेंपरेचर को रेगुलेट करता है I
8.ब्रेन के प्रॉपर फंक्शन के लिए जरूरी I
9.हमारे बॉडी से वेस्ट /टॉक्सिंस को रिमूव करता है I
10जॉइंट्स के लिए महत्वपूर्ण I

शरीर में पानी का उपयोग मस्तिष्क हार्मोन और न्यूरोट्रांसमीटर के निर्माण के लिए होता है।

पानी मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के लिए आघात को अवशोषित करता है।

पानी लार बनाता है, श्लेष्मा झिल्ली को नम रखता है और भोजन को छोटे घटकों में परिवर्तित करता है।

पानी पूरे शरीर में ऑक्सीजन पहुंचाता है।

पानी शरीर के अधिकांश अंगों का प्रमुख घटक है।

पानी शरीर की कोशिकाओं को बढ़ने और प्रजनन करने की अनुमति देता है।

पानी शरीर के जोड़ों को चिकनाई प्रदान करता है।

और अंत में, पानी शरीर के अपशिष्ट को मूत्र में बहा देता है।

अब आप समझ गए होंगे की हमारे स्वस्थ, हृष्ट पुष्ट रहने के लिए पानी का अधिक मात्रा मे सेवन क्यों आवश्यक है।

हर्ट को स्वस्थ रखने के लिए हाइपरटेंशन से दूर रहें, स्ट्रोक का खतरा कम होगा

तनाव प्रबंधन तकनीकों को लागू करके, स्वस्थ जीवन शैली अपनाकर और नींद को प्राथमिकता देकर, आप हृदय रोगों के जोखिम को कम कर सकते हैं और अपने हृदय को स्वस्थ रख सकते हैं। क्रोनिक तनाव और हृदय संबंधी जोखिम को कैसे कम करें। कुछ परिस्थितियों में लंबे समय तक तनाव हमारे समग्र स्वास्थ्य, विशेष रूप से हृदय प्रणाली के लिए हानिकारक हो सकता है।

ऑफिस की तंग समय-सीमाओं और हमारी खराब लाइफस्टाइल के कारण तनाव हमारे दैनिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। हालांकि थोड़ी मात्रा में तनाव होना कोई ज्यादा नहीं होता है, लेकिन कुछ परिस्थितियों में लंबे समय तक तनाव हमारे समग्र स्वास्थ्य, विशेष रूप से हृदय प्रणाली के लिए हानिकारक हो सकता है।

डॉक्टर के मुताबिक, क्रोनिक तनाव शरीर में शारीरिक प्रतिक्रियाओं का एक समूह शुरू करता है, जिसमें कोर्टिसोल और एड्रेनालाईन जैसे तनाव हार्मोन की रिहाई भी शामिल है। उनका कहना है कि ये हार्मोन रक्तचाप बढ़ा सकते हैं, हृदय गति बढ़ा सकते हैं और धमनियों में सूजन पैदा कर सकते हैं।

समय के साथ, इस लगातार तनाव प्रतिक्रिया से रक्त वाहिकाओं को नुकसान हो सकता है, जिससे उनमें प्लाक बनने और संकुचन होने की संभावना बढ़ जाती है, जो कोरोनरी धमनी रोग की एक पहचान है। इसके अतिरिक्त, दीर्घकालिक तनाव उच्च रक्तचाप के विकास में योगदान कर सकता है, जो हृदय रोग और स्ट्रोक के लिए एक प्रमुख जोखिम कारक है। इसके अलावा, लंबे समय तक तनाव में रहने से दिल की विफलता का खतरा बढ़ जाता है, क्योंकि यह समय के साथ हृदय की मांसपेशियों को कमजोर कर सकता है।

इम्यून सिस्टम से लेकर बोन हेल्थ तक के लिए जरूरी है कॉपर रिच फूड, रोजाना डाइट में करें शामिल

अनन्या मिश्रा

सेहतमंद बने रहने के लिए शरीर को कॉपर की कम मात्रा में जरूरत होती है। यह शरीर के एनर्जी लेवल को बढ़ाने के साथ मेंटल हेल्थ को सपोर्ट करता है। इसके अलावा कॉपर हीमोग्लोबिन के संश्लेषण के लिए भी जरूरी माना जाता है।

जब भी हेल्दी डाइट की बात होती है, तो खासतौर पर लोग सबसे पहले माइक्रो न्युट्रिएंट्स के इनटेक पर ध्यान देते हैं। जबकि शरीर के लिए माइक्रो न्युट्रिएंट्स भी इतने ही जरूरी होते हैं, जितना कि कॉपर। सेहतमंद बने रहने के लिए शरीर को कॉपर की कम मात्रा में जरूरत होती है। यह शरीर के एनर्जी लेवल को बढ़ाने के साथ मेंटल हेल्थ को सपोर्ट करता है। इसके अलावा कॉपर हीमोग्लोबिन के संश्लेषण के लिए भी जरूरी माना जाता है।

कॉपर की कमी से लाल रक्त कोशिकाओं का उत्पादन खराब हो सकता है। वहीं शरीर में आयरन के अवशोषण और उपयोग में भी यह शामिल होता है, जो इम्यून सिस्टम के लिए भी अच्छा होता है। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो एक वयस्क को रोजाना 900 एमसीजी कॉपर लेना चाहिए। क्योंकि यह एक जरूरी मिनरल होता है, जिसको आपको अपनी डाइट में शामिल करना होगा। क्योंकि हमारा शरीर इसे स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि डाइट में कॉपर रिच फूड्स शामिल करने से क्या-क्या फायदे मिल सकते हैं।

इम्यून सिस्टम के लिए फायदेमंद

व्हाइट ब्लड सेल्स के प्रोडक्शन और एक्टिविटी में भी कॉपर शामिल होता है। इसलिए यह इम्यून सिस्टम के लिए काफी जरूरी माना जाता है। जब आप अपनी डाइट में पर्याप्त मात्रा में कॉपर रिच फूड्स को शामिल करते हैं, तो यह संक्रमण से लड़ने और इम्यूनिटी को मजबूत करने में सहायक होता है।

ब्रेन हेल्थ के लिए आवश्यक

इसके अलावा ब्रेन हेल्थ के लिए भी कॉपर जरूरी माना जाता है। क्योंकि अगर आपकी डाइट में कॉपर रिच फूड्स शामिल नहीं होते हैं, इसका सीधा असर ब्रेन फंक्शन पर देखने को मिल सकता है। बता दें कि कॉपर की कमी से ब्रेन और नर्व्स का सही तरह से विकास नहीं होता पाता है। जिससे अल्जाइमर रोग का भी खतरा बढ़ता है।

आयरन को अब्जॉर्ब करने में सहायक

कॉपर का सेवन इसलिए भी फायदेमंद है, क्योंकि यह आपकी बॉडी में आयरन एब्जॉर्व करने और इसके उपयोग में सहायता करता है। रेड ब्लड सेल्स और हीमोग्लोबिन के उत्पादन के लिए आयरन को आसानी से इस्तेमाल लायक बनाता है। क्योंकि जब आप पर्याप्त मात्रा में कॉपर लेते हैं, तो इससे शरीर में आयरन की कमी से होने वाले एनीमिया को रोकने या फिर कम करने में सहायक होती है।

बोन हेल्थ के लिए जरूरी है कॉपर

बता दें कि बोन हेल्थ के लिए भी कॉपर काफी जरूरी माना गया है। टिश्यू के निर्माण और रखरखाव में यह बोन शामिल होता है। यह ऑस्टियोब्लास्ट की एक्टिविटी को स्टिम्यूलेट करने में सहायक होता है। ऑस्टियोब्लास्ट बोन सेल्स होती हैं, जो हड्डियों के निर्माण के साथ बोन मैट्रिक्स में कोलेजन फाइबर के क्रॉस-लिंकिंग को सपोर्ट करने का काम करती है। इसलिए जब आप कॉपर रिच फूड्स का सेवन करते हैं, तो आपकी बोन डेंसिटी इंप्रूव होती है और हड्डियों को मजबूती मिलती है।

एनर्जी

कॉपर कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और वसा के मेटाबॉलिज्म में शामिल होता है, जो शरीर की ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत है। यह भोजन को एनर्जी में बदलने के साथ ओवरऑल मेटाबॉलिक फंक्शन को सपोर्ट करने और थकान को रोकने के लिए पर्याप्त मात्रा में कॉपर लेना आवश्यक है।

महिलाओं में आमतौर पर देख जाने वाले यौन संचारित संक्रमण के ये 6 लक्षण, बिल्कुल भी नजरअंदाज न करें

दिव्यांशी भदौरिया

महिलाओं में यौन संचारित रोग (एसटीडी) होने की संभावना पुरुषों की तुलना में अधिक होती है। इसका कारण यौन अंगों में संरचनात्मक अंतर है। एक महिला की शारीरिक रचना उसे एसटीडी के उच्च जोखिम में डालती है। अगर आप भी इस तरह के लक्षण महसूस कर रहे हैं तो आप एक बार डॉक्टर से जरुर मिले।

सेक्सुअली एक्टिव होने पर कई तरह बीमारियां और इंफेक्शन का खतरा बना रहता है। महिलाएं अपने प्राइवेट पार्ट की ढ़ग से सफाई नहीं रखती, तो समस्याएं बढ़ सकती हैं। आमतौर पर इस तरह के इंफेक्शन यौन संबंध बनाते समय होता है। योनि की परत पतली होती है और बैक्टीरिया और वायरस के लिए एक सुविधाजनक प्रजनन स्थल है। इसके अलावा योनि एक नम वातावरण है जो सूक्ष्मजीवों को पनपने में आसान बनाता है। ऐसे में महिलाओं को एसटीडी के बारे में अधिक सावधान रहना चाहिए और लक्षणों को जानना चाहिए।

असामान्य वजाइनल डिस्चार्ज

महिलाओं को एसटीआई के लक्षण महसूस होने पर वजाइनल डिस्चार्ज की समस्या हो सकती है। वजाइनल डिस्चार्ज का रंग अलग और स्मेल हो सकती है। इस तरह का डिस्चार्ज कभी हो सकता है। ये कम या ज्यादा भी हो सकता है।

पेशाब के दौरान दर्द

पेशाब करने में दर्द के पीछे कई कारण हो सकते हैं, लेकिन आपका अनुमान चाहे जो भी हो, अगर आप यौन रूप से सक्रिय व्यक्ति हैं तो एसटीडी से इनकार न करें। एसटीडी के संदर्भ में, दर्दनाक पेशाब का मतलब गोनोरिया, क्लैमाइडिया या हर्पीस हो सकता है।

सैक्स के दौरान दर्द

महिलाओं में एसटीआई होने पर सेक्स के दौरान दर्द भी होता है। जबकि दर्दनाक सेक्स कई कारणों से हो सकता है, एसटीडी ऐसी अधिकांश घटनाओं के लिए जिम्मेदार है। यदि आपको पिछले कुछ समय से सेक्स के दौरान दर्दनाक अनुभव हो रहा है, तो अपने डॉक्टर से परामर्श लें और एसटीडी के लिए परीक्षण करवाएं।

जननांग क्षेत्र में घाव

सिर्फ डिस्चार्ज ही नहीं, कभी-कभी अस्पष्ट जननांग घाव भी आपके शरीर में एसटीडी के लक्षण का संकेत दे सकते हैं। जब आप शरीर के इन क्षेत्रों में घाव देखें तो घरेलू उपचार न आजमाएं। डॉक्टर की मदद लें और बताई गई दवाएं लें। वहीं ये समस्या तेजी से फैलती है, इसके लक्षण हर्पीस, सिफलिस या जननांग में मस्से के भी हो सकते हैं।

असामान्य ब्लीडिंग

पीरियड्स के अलावा जैसे संभोग के बाद और पीरियड्स के बीच में ज्यादा ब्लीडिंग एसटीडी का एक संभावित संकेत हो सकता है। यदि आपको मासिक धर्म के अलावा योनि से रक्तस्राव या रक्त स्राव दिखाई देता है, तो देरी न करें और अपने डॉक्टर से मिलें।

पेल्विक में दर्द

महिलाओं को लगातार हल्का या तेज पेल्विक एरिया में होने वाला दर्द महिलाओं में एसटीडी के लक्षण हो सकते हैं। इस दर्द के साथ कई बार महिलाओं को पेल्विक एरिया में सूजन की समस्या भी हो जाती है। ऐसे में बिनी देर किए डॉक्टर से जरुर मिलें।

आपके बच्चे में भी हैं सेंसरी सीकिंग के लक्षण, नजरअंदाज करना पड़ सकता है भारी

जिस तरह से धीरे-धीरे बच्चा बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उनकी इंद्रियों की क्षमता भी विकसित होने लगती है। हांलाकि सभी बच्चों एक जैसी गतिविधियां नहीं पाई जाती है। हम आपको बच्चों में होने वाले सेंसरी सीकिंग के बारे में जानकारी देने जा रहे हैं।

बच्चों का चुलबुलापन और शरारतें भला किसे पसंद नहीं होती हैं। वहीं उम्र बढ़ने के साथ ही बच्चों के शरीर में कई तरह के शारीरिक और मानसिक विकास भी होते रहते हैं। जिस तरह से धीरे-धीरे बच्चा बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उनकी इंद्रियों की क्षमता भी विकसित होने लगती है। बच्चे जब बचपन में इंद्रियों में संवेदी अनुभव की तलाश करना शुरू करते हैं। तो बच्चे हर चीज की तरफ आकर्षित होने लगते हैं।

हांलाकि सभी बच्चों में एक जैसी गतिविधियां नहीं पाई जाती हैं। इस तरह की स्थिति को सेंसरी सीकिंग कहा जाता है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बच्चों में होने वाले सेंसरी सीकिंग के बारे में जानकारी देने जा रहे हैं।

आपको बता दें कि बढ़ती उम्र के साथ ही बच्चे स्वाद, ध्वनि, गंध, दृष्टि और स्पर्श जैसी चीजों के प्रति आकर्षित होते हैं। वह धीरे-धीरे इन चीजों को जानते और समझते हैं। हांलाकि सभी बच्चों में यह स्थिति समान नहीं होती है। जहां कुछ बच्चे खेलकूद के प्रति आकर्षित होते हैं, तो वहीं कुछ बच्चों का किसी खास तरह के म्यूजिक और कुछ का खाने-पीने की चीजों की तरफ आकर्षण होता है। इस स्थिति को ही सेंसरी सीकिंग कहा जाता है। लेकिन क्या आपको मालूम है कि कुछ बच्चों में सेंसरी सीकिंग से जुड़ी कुछ परेशानियां भी होती हैं।

सेंसरी सीकिंग से जुड़े लक्षण

गले लगने में हिचकिचाना
किसी की गोद में न जाना
वस्तुओं को छूना या सहलाना
स्थिर बैठने में परेशानी होना
हाइपर एक्टिव होना
ऊँचे स्थानों से कूदना
बार-बार चीजों को मुंह में डालना

बच्चों में इस तरह के लक्षण दिखने पर उनका विशेष तौर पर ध्यान रखना चाहिए। इस स्थिति को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। क्योंकि इससे उनके कई तरह की परेशानियों का खतरा बढ़ जाता है। बता दें कि सेंसरी सीकिंग से जुड़ी स्थितियां बच्चों को इंद्रियों को ट्रिगर कर सकती हैं। सेंसरी सीकिंग के कारण बच्चों में स्पर्श, लाइट, साउंड और गंध आदि से जुड़ी परेशानियों का खतरा होता है।

इसके अलावा बच्चों को किसी बात के लिए रोकटोक न करना भी उनके लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है। वहीं हर बात के लिए बच्चों को न कहना भी कम खतरनाक नहीं होता है। लेकिन बच्चे की हर बात को मानना उन पर नकारात्मक असर डाल सकता है। इसलिए माता-पिता को बच्चों को हां या नहीं बोलने की लिमिट सेट करनी चाहिए। वहीं असामान्य लक्षण दिखने पर डॉक्टर से जरूर संपर्क करना चाहिए।

26 अप्रैल को नहीं होगा मेयर का चुनाव

परिवहन विशेष न्यूज

- 'एलजी ने सीएम की सिफारिश के बिना नहीं की पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति...
- 26 अप्रैल को होना था चुनाव, अब अपने पदों पर बने रहेंगे शैली और इकबाल-

नई दिल्ली। दिल्ली के मेयर और डिप्टी मेयर का चुनाव टल गया है। बुधवार को भारत निर्वाचन आयोग ने दिल्ली में मेयर और डिप्टी मेयर का चुनाव कराने की अनुमति दे दी थी। परंतु दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के जेल में होने की वजह से इसमें तकनीकी पेंच फंस गया। इसके बाद उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति की फाइल इस आधार पर वापस कर दी कि 'इस पर दिल्ली के मुख्यमंत्री के हस्ताक्षर नहीं हैं और उपराज्यपाल केवल मुख्यमंत्री की सिफारिश पर यह काम कर सकते हैं।'' मेयर चुनाव टले पर आप पार्षद विजय कुमार ने वापस नहीं लिया अपना नामांकन दिल्ली के मेयर और डिप्टी मेयर का चुनाव भले ही टल गया हो पर आम आदमी पार्टी में बगावत खत्म नहीं हुई है। डिप्टी मेयर पद के लिए बागी बतौर अपना पर्चा दाखिल करने वाले आप पार्षद विजय कुमार ने अपना नामांकन अभी तक वापस नहीं लिया हे। बताया जा रहा है कि आप में चल रही इस बगावत के तार भारतीय जनता पार्टी से जुड़े हो सकते हैं। बीते 18 अप्रैल को आप और बीजेपी के अधिकृत पार्षदों ने मेयर और डिप्टी मेयर पदों के लिए अपने-अपने नामांकन पत्र दाखिल किये थे परंतु इस दौरान आप के दो निगम पार्षदों ने अपने पार्टी नेतृत्व के साथ बगावत करते हुए डिप्टी मेयर के पद के लिए अपने नामांकन पत्र दाखिल कर दिये थे। इसके तीन दिन पश्चात आप के एक बागी पार्षद नरेंद्र गिरसा ने अपना नामांकन पत्र वापस ले लिया था। परंतु विजय कुमार 25 अप्रैल तक आप नेताओं के संपर्क से दूर रहे और उन्होंने अपना मोबाइल फोन भी बंद रखा। गौरतलब है कि मेयर या डिप्टी मेयर के पद के चुनाव के लिए एक प्रपोजर और एक सैकेंडर (प्रस्तावक एवं अनुमोदक) के बतौर दो निगम पार्षदों को नामांकन पत्र पर हस्ताक्षर करने होते हैं। इस दौरान जानकारी सामने आई है कि आप पार्षद विजय कुमार के नामांकन पत्र बीजेपी के एक निगम पार्षद ने प्रस्ताक बतौर हस्ताक्षर किये हैं जबकि अनुमोदक के रूप में आम आदमी पार्टी के निगम पार्षद के हस्ताक्षर हैं। हालांकि आम आदमी पार्टी ने अभी तक इस मामले को मुद्दा नहीं बनाया है और नाही बीजेपी ने इसके बारे में कोई घोषणा की है। अब मेयर का चुनाव टलने के बाद यह माना जा रहा है कि आप के बागी पार्षद विजय कुमार पर पार्टी की ओर से दबाव बनाया जा सकता है। कारण है कि ज्यादा दिन तक कोई भी व्यक्ति कैसे गायब रह सकता है? ऐसे में हो सकता है कि आप पार्षदों की बगावत कुछ हद तक ठंडी पड़ जाये। इसी के साथ यह बात भी सामने आई की इलेक्शन टलने से निगम को 10 लाख रूपये का चूना लग गया।

मेयर एवं डिप्टी मेयर का चुनाव टलने से दिल्ली नगर निगम को करीब 10 लाख रूपये का नुकसान हुआ है। एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक मेयर -डिप्टी मेयर का चुनाव कराने पर करीब साढ़े 10 लाख रूपये तक का खर्च आ जाता है। इसमें बैलट पेपर्स से लेकर अन्य सभी प्रकार के खर्चे शामिल हैं। क्योंकि 26 अप्रैल को चुनाव होना था और 25 अप्रैल तक नगर निगम ने चुनाव से संबंधित सभी प्रकार की तैयारियां कर ली थीं। अतः ऐन मौके पर चुनाव टलने की वजह से 26 अप्रैल के बाद कभी भी चुनाव कराने के लिए नगर निगम को यही तैयारियां फिर से करनी होंगी।

दिल्ली में एलजी कर रहे सीएम केजरीवाल की सलाह का इंतजार

दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के मेयर और महापौर के शुक्रवार को होनेवाले चुनाव स्थगित कर दिए गए हैं। उपराज्यपाल कार्यालय ने इस संबंध में नोटिस जारी किया है। वहीं महापौर चुनाव होने तक वर्तमान महापौर और उप महापौर इस पद पर बने रहेंगे। एलजी सक्सेना ने कहा कि वह बिना मुख्यमंत्री की सलाह के पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति पर निर्णय नहीं ले सकते हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के मेयर और महापौर के शुक्रवार को होनेवाले चुनाव स्थगित कर दिए गए हैं। वहीं, महापौर चुनाव होने तक वर्तमान महापौर और उप महापौर इस पद पर बने रहेंगे। कल चुनाव तो नहीं होंगे लेकिन इस दौरान निगम सदन की बैठक होगी। ऐसे में कल निगम सदन की बैठक में हंगामा होने की पूरी संभावना है। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने कहा कि वह बिना मुख्यमंत्री की सलाह के पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति पर निर्णय नहीं ले सकते हैं।

नियमों की अनदेखी करने का लगाया आरोप : इससे पहले आप नेता ने सौरभ भारद्वाज ने केंद्र पर एमसीडी चुनाव रोकने और आप को सत्ता से बाहर रखने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि पीठासीन अधिकारी को नामित करने का प्रस्ताव मुझे बताए गुपचुप तरीके से उपराज्यपाल को भेजा गया। मैंने फाइल वापस करने के लिए उपराज्यपाल को पत्र लिखा था, जिसमें कहा गया था कि यह नियमों का उल्लंघन करके सीधे उन्हें भेजा गया था। उन्होंने कहा कि बुधवार को मैंने फिर से मुख्य सचिव नरेश कुमार को पत्र लिखा और उनसे पूछा कि किस नियम के तहत उन्होंने मेरी अनदेखी की और फाइल भेज दी।

महेश खिच्ची को आप ने बनाया था उम्मीदवार : बता दें, महापौर पद पर आप ने महेश खिच्ची तो भाजपा ने किशन लाल को प्रत्याशी बनाया था। वहीं उप-महापौर पर पद पर आप ने रविंद्र भारद्वाज और भाजपा ने नीता बिष्ट को प्रत्याशी बनाया था। आप के बागी पार्षद विजय कुमार ने उप-महापौर पद पर नामांकन दाखिल किया था। एक अन्य बागी नरेंद्र कुमार ने भी नामांकन दाखिल किया था लेकिन बाद में वह नामांकन वापस ले लिया।

पश्चिम जिले में "सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रम"

"JAN SAMPARK VAAHAN" FOR AWARENESS

नई दिल्ली। "जन संपर्क वाहन" की संकल्पना सामुदायिक पहुंच बढ़ाने के उद्देश्य से की गई थी। यह वाहन सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न विषयों पर लघु फिल्में प्रदर्शित करने वाली एक बड़ी वीडियो स्क्रीन से सुसज्जित है। पश्चिमी जिले में पांच प्रमुख स्थानों पर जागरूकता अभियान चलाया गयाः पेसिफिक मॉल, सुभाष नगर; जिला केंद्र, जनकपुरी; मुख्य बाज़ार, राजौरी गार्डन; घंटा घर चौक, हरि नगर; और चौखंडी चौक, ख्याला।

साइबर अपराध, धोखाधड़ी, धोखाधड़ी, ऑनलाइन घोटाले, ओटीपी-संबंधी धोखाधड़ी, जबरन वसूली, हनी ट्रैपिंग, लॉटरी घोटाले और बहुत कुछ को कवर करने वाली लघु फिल्मों के माध्यम से आम जनता को विभिन्न अपराधों के बारे में शिक्षित किया गया। बड़ी संख्या में लोग वीडियो देखकर कार्यक्रम से जुड़े और पहल से लाभान्वित हुए, विशेषकर महिलाएं।

"नशा मुक्त पश्चिमी दिल्ली"

इस अभियान के हिस्से के रूप में, एक व्हाट्सएप नंबर (6828401608) जनता के साथ साझा किया गया है, जिसमें उनसे किसी भी तरह की रिपोर्ट करने का आग्रह किया गया है। उनके आसपास नशीली दवाओं से संबंधित संदिग्ध गतिविधियाँ। सूचना देने वाले की पहचान गोपनीय रहेगी। व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के लिए, विभिन्न स्थानों पर फ़्लायर्स वितरित किए जा रहे हैं, पश्चिम जिले के सभी सिनेमाघरों में ब्रेक के दौरान संख्या प्रदर्शित की जा रही है, सभी पार्कों में पोस्टर लगाए गए हैं, और नशा मुक्त जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया गया है। और अभियान में भागीदारी को प्रोत्साहित करें।

आत्मरक्षा प्रशिक्षण के लिए "शक्ति" कार्यक्रम

स्कूल जाने वाली लड़कियों में आत्मविश्वास जगाने के लिए पश्चिम जिले के विभिन्न स्कूलों में आत्मरक्षा कार्यक्रम 'शक्ति' का आयोजन किया जा रहा है। अप्रैल में, कार्यक्रम तीन स्कूलों में आयोजित किया गया थाः

1. एस.के.वी. नंबर 2, पंजाबी बाग
2. सरकार. सह-शिक्षा वरिष्ठ सेकेंडरी स्कूल करमपुरा
3. सरकार. सह-शिक्षा वरिष्ठ सेकेंडरी स्कूल एच-ब्लॉक करमपुरा

इस कार्यक्रम के तहत, 01.04.2024 से 20.04.2024 की अवधि के दौरान 1000 महिला छात्रों को आत्मरक्षा तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया, जिसमें विभिन्न प्रकार के कोहनी और घुटने के हमले, घूंसे, किक, रक्षा, ब्लॉक और हमलों की श्रृंखला शामिल थी। इस कार्यक्रम से इन लड़कियों में किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना करने के लिए आत्मविश्वास पैदा होने की उम्मीद है।

(विचित्रा वीर) आईपीएस
उपायुक्त. पुलिस आयुक्त
पश्चिम जिला, दिल्ली

मदनगीर के भाजपा कार्यकताओं ने बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया हनुमान जन्मोत्सव

हनुमान चालीसा के पाठ से चहु दिशा हुआ गूंजयमान

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर जगह-जगह हनुमान चालीसा के पाठ से सारा वातावरण गुंजयमान हो गया। इस अलौकिक एवं मर्मस्पर्शी अनुभव ने सभी को भक्ति के सागर में डुबकी लगाने का सुअवसर प्रदान किया।भाजपा कार्यकर्ताओं ने दिल्ली के 9745 स्थानो पर हनुमान चालीसा का पाठ कर सनातन संस्कृति का अनुपम उदाहरण पेश किया। यह अनुभव सबके लिए अनुपम एवं हृदय स्पर्शी रहा। मदनगीर मंडल में के 38 बूथों पर भी हनुमान चालीसा का भव्य पाठ किया गया। मदनगीर मंडल के सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग से हनुमान चालीसा का पाठ हर बूथ पर हुआ।हनुमान जयंती के अभी तक के इतिहास में यह नाजरा अनुपम एवं अविस्मरणीय बनाकर सभी के दिलों पर छा गया। महरौली जिला भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के जिला अध्यक्ष चंद्रपाल बैरवा एवं मदनगीर मंडल भाजपा के अध्यक्ष दिलीप देवतवाल ने हनुमान चालीसा के पाठ में न सिर्फ भाग लिया बल्कि इसके आयोजन में भी अपनी अति महत्वपूर्ण भागीदारी निभाकर यश प्राप्त किया। इस सफल और भव्य कार्यक्रम को लेकर मंडल अध्यक्ष दिलीप देवतवाल ने सभी मंडल पदाधिकारी एव कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सनातन संस्कृति भारत की पहचान है तथा हनुमान चालीसा का इतने व्यापक स्तर पर पाठ उसकी लोकप्रियता का द्योतक।भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार हमेशा सनातन धर्म को लेकर हर पर्व त्योहार को व्यापक स्तर पर मनाने व उसकी रक्षा के लिए कार्य करती आ रही है। इस भव्य हनुमान चालीसा के पाठ के उपरांत सभी भक्तों व क्षेत्रवासियों ने फिर एक बार मोदी सरकार बनाने का संकल्प लिया।

पार्टियों की बदली रणनीति, प्रचार का भी बदला मिजाज; अब कांग्रेस से बीजेपी पूछ रही सवाल

परिवहन विशेष न्यूज

राजधानी में भाजपा नेता व प्रत्याशी अब तक भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी पर जुबानी हमला कर रहे थे परंतु पिछले दो दिनों से इसमें बदलाव आने लगा है। बुधवार को भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदर्शन किया। अब वह आप पर निशाना साधने के साथ ही कांग्रेस के घोषणा पत्र पर सवाल उठा रहे हैं।

नई दिल्ली। राजधानी में अब तक भाजपा के चुनाव प्रचार नरेन्द्र मोदी सरकार की उपलब्धियों और आबकारी घोटाले में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के आसपास घूम रही थी। नेता और प्रत्याशी इन्हीं विषयों को जनता के बीच उठा रहे थे, परंतु दो दिनों से उनके सुर बदल गए हैं। अब वह आप पर निशाना साधने के साथ ही कांग्रेस के घोषणा पत्र पर सवाल उठा रहे हैं। वह आरोप लगा रहे हैं कांग्रेस तुष्टीकरण की राजनीति कर रही है। सत्ता में आने पर वह आर्थिक सर्वे के बहाने हिंदुओं की संपत्ति पर कब्जा करना चाहती है।

प्रधानमंत्री ने चुनावी सभा में कांग्रेस के घोषणा पत्र में आर्थिक सर्वे कराने के वादे का का उल्लेख किया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि धन के समान वितरण के नाम पर कांग्रेस हिंदुओं की संपत्ति पर कब्जा कर उसे घुसपैठियों को देना चाहती है। उनके इस बयान के बाद आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति तेज हो गई है।

असर दिल्ली के चुनाव प्रचार पर भी पड़ा

इसी बीच इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष व राहुल गांधी के सलाहकार सैम पित्रोदा द्वारा भारत में अमेरिका की तरह विरासत टैक्स लगाने की पैरवी करने से भाजपा को कांग्रेस को घेरने का मौका मिल गया। कर्नाटक में मुस्लिम को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल करने को भी तूल दिया जा रहा है। भाजपा नेता मंच से इसे लेकर कांग्रेस को कठघरे में खड़ा कर रहे हैं। इसका असर दिल्ली के चुनाव प्रचार पर भी पड़ा है।

जुबानी हमले के बाद बीजेपी की बदली रणनीति

राजधानी में भाजपा नेता व प्रत्याशी अब तक भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी पर जुबानी हमला कर रहे थे, परंतु पिछले दो दिनों से इसमें बदलाव आने लगा है। बुधवार को भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदर्शन किया। उसके बाद प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने इस विषय पर प्रेसवार्ता की और कहा कि पार्टी इसे लेकर आंदोलन करेगी। भाजपा के सभी प्रत्याशियों ने भी बयान जारी कर कांग्रेस की निंदा की है। वह जनसंपर्क अभियान के दौरान इस विषय को उठा रहे हैं।

जनता के बीच इसे लेकर जाने की तैयारी

इस मुद्दे को जनता के बीच लेकर जाने की योजना बनाई जा रही है। भाजपा नेताओं का कहना है कि कर्नाटक में मुस्लिमों को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल करने से कांग्रेस की मंशा को समझा जा सकता है। वह तुष्टीकरण के लिए पिछड़े वर्ग को आरक्षण से वंचित कर मुस्लिमों को इसका लाभ देना चाहती है। दिल्ली में रहने वाले अन्य पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति व जनजाति समाज को कांग्रेस की सच्चाई बताकर उन्हें सचेत किया जाएगा। भाजपा महिला मोर्चा की कार्यकर्ता भी घर-घर जाएंगी।

इंटरनेट मीडिया पर शेयर किए जा रहे हैं पोस्ट

नेताओं की बयानबाजी व प्रदर्शन के साथ ही इंटरनेट मीडिया पर भी इसे लेकर दिल्ली भाजपा ने अभियान शुरू कर दिया है। इंटरनेट पर इससे संबंधित वीडियो व अन्य पोस्ट शेयर किए जा रहे हैं।

उधार के पैसे नहीं लौटाने पर शख्स का किया अपहरण, फिर उसे आठवीं मंजिल से फेंका; मौत

उधार के पैसे नहीं लौटाने पर अपहरण करने के बाद दो आरोपितों ने युवक को लोधी कॉलोनी स्थित एक इमारत में ले गए और वहां पिटाई करने के बाद घायल कर दिया। उसके बाद युवक को आठवीं मंजिल से नीचे फेंक दिया। इससे युवक की मौके पर मौत हो गई। आरोपित वहां से भाग गए। पुलिस ने जांच करने के बाद दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया।

दक्षिणी दिल्ली। उधार के पैसे नहीं लौटाने पर अपहरण करने के बाद दो आरोपितों ने युवक को लोधी कॉलोनी स्थित एक इमारत में ले गए और वहां पिटाई करने के बाद घायल कर दिया। उसके बाद युवक को आठवीं मंजिल से नीचे फेंक दिया। इससे युवक की मौके पर मौत हो गई। आरोपित वहां से भाग गए। पुलिस ने जांच करने के बाद दोनों आरोपितों को गाजियाबाद की साया गोल्ड सोसाइटी इंदिरापुरम से गिरफ्तार कर लिया।

ब्रिटेन में सिख समुदाय के आपसी विवादों को सुलझाने हेतु सिख अदालत की स्थापना प्रशंसनीय कदम: परमजीत सिंह सरना

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। शिरोमणि अकाली दल दिल्ली इकाई के अध्यक्ष सरदार परमजीत सिंह सरना ने ब्रिटेन में सिखों के आपसी मुद्दों को सुलझाने हेतु सिख कानूनी पेशेवरों द्वारा 'द सिख कोर्ट' की स्थापना पर बधाई देते हुए इस पहल की जमकर सराहना की।

यहां जारी वक्तव्य में परमजीत सिंह सरना ने कहा कि 20 अप्रैल को ब्रिटेन के सिख समुदाय द्वारा नागरिक तथा पारिवारिक विवादों को सुलझाने की दिशा में लिया गया यह कदम बेहद सराहनीय है। उन्होंने बताया कि 2008 में दिल्ली में प्रख्यात सिख वकील के.टी.एस. तुलसी की सहायता से सिखों के मुद्दों को सुलझाने के लिए एक मध्यस्थता मंच शुरू किया गया था।

सरना ने आगे कहा कि हम इस अद्भुत और ऐतिहासिक पहल के लिए ब्रिटेन के सिखों की सराहना करते हैं क्योंकि सामुदायिक मध्यस्थता के माध्यम से नागरिक तथा पारिवारिक मुद्दों को सुलझाने में यह सहायक सिद्ध होगा। सिख अदालत को बनाने वाली ''सिख्स इन लॉ'' 2020 में स्थापित की गई थी। जो अपनी तरह का सबसे बड़ा सिख पेशेवर नेटवर्क है व यूनाइटेड किंगडम में छात्रों, चार्टर्ड कानूनी कार्यकारिणी, वकील, बैरिस्टर और न्यायाधीशों का प्रतिनिधित्व करता है।

यह पंथ, अखंडता और वकालत के मूल्यों के माध्यम से अपने सभी सदस्यों को जोड़ने, विजयी बनाने व समर्थन करने के लिए समर्पित है। संगठन अपने सदस्यों व विद्यार्थियों के व्यावसायिक विकास में सहायता करने, कानूनी क्षेत्र में सिख प्रोफ़ाइल को ऊपर उठाने सहित कक्षा से बोर्डरूम तक पहलकदमी को चलाने का प्रयास भी यह संस्था करती है।

वोट पर्चियों (Slips) के लिए

ईसीआई <स्पेस> (आपका वोटर आईडी) लिखकर 1950 पर एसएमएस करें। आपको 15 सेकंड के अंदर वोट पर्ची मिल जाएगी।

जैसे :-

ECI SWD3456789 1950 पर SMS कर दें।

कृपया यह संदेश लोकहित में आगे प्रेषित करें। धन्यवाद।

वोट देने वालों को नमो भारत में मिलेगी खास सुविधा

स्टैंडर्ड कोच का टिकट लेकर कर सकेंगे प्रीमियम में सफर

गाजियाबाद के मतदान करने वाले यात्री स्टैंडर्ड टिकट में भी प्रीमियम कोच में यात्रा कर पाएंगे। इस ऑफर का लाभ उठाने के लिए यात्रियों को आरआरटीएस कनेक्ट ऐप से स्टैंडर्ड कोच की टिकट खरीदनी होगी इसके आधार पर ही वे प्रीमियम कोच में यात्रा के पत्र होंगे। नमो भारत ट्रेन में छह कोच हैं जिनमें एक कोच प्रीमियम कोच है जबकि अन्य पांच कोच स्टैंडर्ड कोच हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद। संसदीय चुनाव 2024 में मतदान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एनसीआरटीसी ने गाजियाबाद क्षेत्र के मतदाताओं के लिए एक अभियान शुरू किया है। इस जागरूकता अभियान में मतदाताओं को उनके लोकतांत्रिक अधिकार का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

इस क्षेत्र में 26 अप्रैल को मतदान होना है। मतदान करने वाले यात्री स्टैंडर्ड टिकट में भी प्रीमियम कोच में यात्रा कर पाएंगे। यह नागरिकों को चुनावों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए संलग्न करने और सशक्त बनाने के लिए भारत के चुनाव आयोग (ईसीआई) की विभिन्न पहलों के अनुरूप है।

वोट डालने वाले यात्रियों को मिलेगा लाभ

इस अभियान के तहत जो यात्री अपना वोट डालेंगे, वो ही इस खास ऑफर का लाभ उठाने के लिए योग्य होंगे। इस ऑफर का लाभ उठाने के लिए यात्रियों को स्टेशन के प्लेटफॉर्म लेवल पर बने प्रीमियम लाउंज के एएफसी गेट पर मौजूद स्टाफ को अपनी मतदान इंक लगी हुई अंगुली दिखानी होगी। इसके बाद स्टाफ उन्हें प्रीमियम लाउंज में प्रवेश करवा देगा और इसके बाद यात्री सीधे नमो भारत ट्रेन के प्रीमियम कोच में सफर कर सकेंगे।

'आरआरटीएस कनेक्ट ऐप' से लेना होगा टिकट

इस ऑफर का लाभ उठाने के लिए यात्रियों को 'आरआरटीएस कनेक्ट ऐप' से स्टैंडर्ड कोच की टिकट खरीदनी होगी, इसके आधार पर ही वे प्रीमियम कोच में यात्रा के पत्र होंगे। नमो भारत ट्रेन में छह कोच हैं, जिनमें

एक कोच प्रीमियम कोच है जबकि अन्य पांच कोच स्टैंडर्ड कोच हैं।

आम चुनाव 2024 में मतदाताओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए ईसीआई के 'चुनाव का पर्व, देश का गर्व' अभियान के अनुरूप यह पहल चुनावी प्रक्रिया में शामिल होने के महत्व पर प्रकाश डालकर यात्रियों के बीच सामुदायिक और नागरिक जिम्मेदारी की भावना पैदा करने का प्रयास है। एनसीआरटीसी यात्रियों को नमो भारत ट्रेन में प्रीमियम कोच की बढ़ी हुई आराम और सुविधा का आनंद लेने का मौका दे रहा है।

'आरआरटीएस कनेक्ट ऐप' यहां से करें डाउनलोड

आरआरटीएस कनेक्ट ऐप को गूगल प्ले और एप्पल स्टोर दोनों से डाउनलोड किया जा सकता है। गूगल प्ले डाउनलोड लिंक है:

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.ncrtc&hl=en_US

और एप्पल स्टोर डाउनलोड लिंक है:

https://apps.apple.com/in/app/rrts-connect/id6448940583

ट्रेन में क्या हैं खास सुविधाएं

नमो भारत ट्रेनों के शानदार और आरामदायक प्रीमियम कोच में यात्रियों के लिए खास सुविधाएं हैं, जिनमें मोबाइल और लैपटाप चार्जिंग पॉइंट्स की सुविधा के साथ रिक्लाइनिंग सीट्स हैं। इसके साथ ही इस कोच में अन्य यात्री केन्द्रित सुविधाएं जैसे कोट हैंगर, मैगजीन होल्डर, वॉटर बोटल होल्डर, फुटरेस्ट और विंडो पर धूप से बचने के लिए पारदर्शी पर्दों की सुविधा भी है।

वर्तमान में दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर पर साहिबाबाद और मोदी नगर नॉर्थ के बीच 34 किमी के सेक्शन में नमो भारत ट्रेन सेवाएं संचालित हैं। इस सेक्शन में आठ स्टेशन हैं, जिनमें साहिबाबाद, गाजियाबाद, गुलधर, दुहाई, दुहाई डिपो, मुराद नगर, मोदी नगर साउथ और मोदी नगर नॉर्थ स्टेशन शामिल हैं। दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर की लंबाई 82 किमी है और कॉरिडोर के शेष हिस्सों पर भी निर्माण कार्य तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। एनसीआरटीसी जून 2025 तक दिल्ली के सराय काले खां से मेरठ के मोदीपुरम तक ट्रेनों का संचालन आरंभ करने के लक्ष्य पर काम कर रही है।

ये होंगी शर्तें

* यह अभियान केवल 26 अप्रैल, 2024 के लिए सक्रिय है।

* इस अभियान में भाग लेने के लिए 'आरआरटीएस कनेक्ट ऐप' पर टिकट बुक करना अनिवार्य है।

* प्रीमियम कोच का निःशुल्क अपग्रेड सीटों की उपलब्धता पर निर्भर है।

गुरुग्राम में बढ़ रहे आंखों में एलर्जी के मामले, रोजाना सैंकड़ों लोग पहुंच रहे अस्पताल

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम के नागरिक अस्पताल में कंजक्टिवाइटिस आंखों (आंखों में होने वाला संक्रमण) और सूखेपन के मरीज अस्पताल पहुंच रहे हैं। मरीजों में आंखों में लालपन सूखापन जैसी परेशानी भी बढ़ गई है। गर्मियों के दिनों में आंख आना (कंजक्टिवाइटिस) के मामले बढ़ने लगते हैं। इस बीमारी से सबसे ज्यादा बच्चे प्रभावित होते हैं। धूप में ज्यादा देर रहने से आंखों में खुजली होने लगती है।

गुरुग्राम। तापमान में उतार-चढ़ाव के चलते वायरल बुखार के बाद अब आंखों की समस्याएं बढ़ने लगी है। नागरिक अस्पताल में कंजक्टिवाइटिस आंखों (आंखों में होने वाला संक्रमण) और सूखेपन के मरीज अस्पताल पहुंच रहे हैं। मरीजों में आंखों में लालपन, सूखापन जैसी परेशानी भी बढ़ गई है। इसके अलावा डायरिया के मरीज भी इन दिनों अस्पताल में आ रहे हैं।

गुरुवार को सुबह से ही मरीजों को भीड़ जुटना शुरू हुई पर्चा काउंटर से लेकर दवा काउंटर और डॉक्टरों के कक्षों के बाहर मरीजों की लाइनें लग गई करीब ओपीडी में 2480 मरीजों ने ओपीडी में जांच कराई।

इसमें बाल रोग विभाग में 210, मेडिसिन विभाग में 320, हड्डी रोग विभाग में 200, चर्म रोग विभाग में भी 180, इएनटी में 200 व नेत्र रोग के 180 और गायनी विभाग में 250 से ज्यादा गर्भवती जांच कराने पहुंची।

क्यों बढ़ रही आंखों में सूखेपन की समस्या?

नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. शुभा बंसल ने बताया कि इस मौसम में वायरस सक्रिय रहता है। जो धूल के कणों के साथ मिलकर आंखों को हानि पहुंचाता है। गर्मियों के दिनों में आंख आना (कंजक्टिवाइटिस) के मामले बढ़ने लगते हैं। इस बीमारी से सबसे ज्यादा बच्चे प्रभावित होते हैं।

धूप में ज्यादा देर रहने से आंखों में खुजली होने लगती है। जिसके बाद आंख रगड़ने पर वह लाल हो जाती है। आंखों से पानी निकलने लगता है। उन्होंने बताया कि आंखों में सूखेपन की समस्या भी बढ़ गई है। क्योंकि गर्मी से बचाव के लिए लोग हर समय पंखे और एसी चला रहे हैं, जो आंखों की नमी सोख रहे हैं। आंखों में सूखेपन से देखने में भी समस्या हो सकती है।

रोजाना तीन से चार गंभीर मरीजों को किया जा रहा भर्ती

बाल रोग विशेषज्ञ और मेडिसिन कक्ष में इन दिनों डायरिया के मरीजों की संख्या भी बढ़ रही है। ऐसे में रोजाना तीन से चार गंभीर मरीजों को भर्ती किया जा रहा है।

यह हैं लक्षण

आंख लाल होना, खुजली होना, सूखापन, जलन, पानी आना, दर्द होना।

दिग्गजों के मुद्दों से लहलहा रही वोट बैंक की फसल, स्थानीय सूरमाओं पर काटने का जिम्मा

लोकसभा क्षेत्र गाजियाबाद से भाजपा कांग्रेस और बसपा प्रत्याशी समेत कुल 14 उम्मीदवार चुनाव के मैदान में हैं। सभी राजनीतिक दलों के प्रत्याशियों ने मतदाताओं को अपने पक्ष करने के लिए पूरा जोर लगाया है। गाजियाबाद लोकसभा सीट के लिए 26 अप्रैल यानी शुक्रवार को मतदान होगा। सभी प्रमुख सियासी दलों के प्रत्याशियों के पक्ष में दिग्गज अपने-अपने मुद्दों से वोट बैंक का बीज बो कर जा चुके हैं।

साहिबाबाद। चुनाव प्रचार थम गया है। मतदान का समय आ गया है। सियासी दलों के दिग्गजों के मुद्दों से वोट बैंक की फसल लहलहा रही है। उसे काटने का जिम्मा अब स्थानीय सूरमाओं के कंधे पर है।

स्थानीय सूरमा इस जिम्मेदारी से बखूबी वाकिफ भी हैं। वह एक-एक वोट पक्का करने के लिए चालें चल रहे हैं। बिसात बिछा दी गई है। अब देखना यह होगा कि किसकी चाल सही पड़ती है और वह गाजियाबाद से संसद तक का सफर करता है।

सबके अपने-अपने मुद्दे

गाजियाबाद लोकसभा सीट के लिए 26 अप्रैल यानी शुक्रवार को मतदान होगा। सभी प्रमुख सियासी दलों के प्रत्याशियों के पक्ष में दिग्गज अपने-अपने मुद्दों से वोट बैंक का बीज बो कर जा चुके हैं। भाजपा की बात की जाए तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रोड शो कर बिना कुछ बोले सबका साथ सबका विकास का संदेश दे चुके हैं।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने खुद को स्थानीय नेता बताते देश की अर्थव्यवस्था की बात की। उनके मुद्दों में आंतरिक सुरक्षा भी प्रमुख रहा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में कानून-व्यवस्था पर जोर देते हुए मतदाताओं को साधने की कोशिश कर गए हैं।

इसी तरह आइएनडीआइए के राहुल गांधी इलेक्टरोल बॉन्ड के जरिए भाजपा को घेरने की कोशिश की। उन्होंने भ्रष्टाचार, महंगाई व बेरोजगारी का मुद्दा उठाया। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने भी भ्रष्टाचार को ही मुद्दा बताया। बसपा की बात करें तो पार्टी सुप्रीमो मायावाती ने वंचित, किसान, जातिवाद और संप्रदायिकता का मुद्दा उठाया।

क्षेत्रवाद के आधार पर भी बोए गए हैं वोट बैंक के बीज

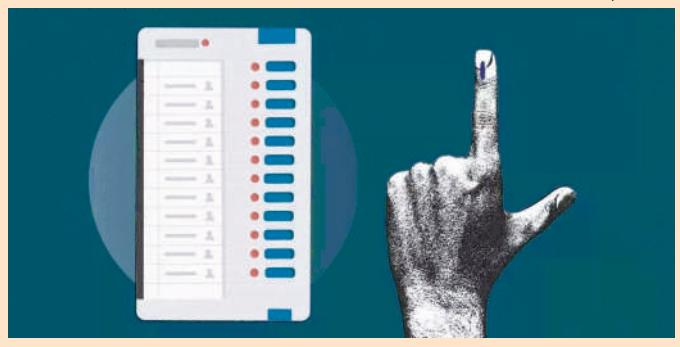

गाजियाबाद लोकसभा क्षेत्र में वैसे तो करीब - करीब हर राज्य के लोग रहते हैं और यहां के मतदाता भी बन गए हैं। उनमें बिहार, पूर्वांचल और उत्तराखंड के लोगों की भागीदारी अधिक है।

यही कारण रहा है कि चुनाव प्रचार के दौरान सभी सियासी दलों ने इसका खास ध्यान रखा है। बतौर बानगी भाजपा ने बिहार व पूर्वांचल के मतदाताओं को साधने के लिए पूर्वांचल की धरती वाराणसी से आने वाले रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और बिहार की धरती के सांसद मनोज तिवारी की जनसभाएं हुईं।

उत्तराखंड के मतदाताओं को अपनी ओर करने के प्रयास में वहां के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी का कार्यक्रम कराया। इसी तरह आइएनडीआइए प्रत्याशी के पक्ष में बिहार व पूर्वांचल के मतदाताओं को करने के लिए कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय व प्रमोद तिवारी के कार्यक्रम हुए। उत्तराखंड के मतदाताओं को अपनी ओर करने के लिए हरिद्वार के कांग्रेस नेता आनंद रावत को मैदान में उतारा गया।

अब फसल काटने की बारी

चुनाव प्रचार थमने के बाद इसकी जिम्मेदारी अब सीधे-सीधे प्रत्याशी और उनके सिपहसालारों पर टिक गई है। वह इसके लिए पूरी से तैयार है। अपनी-अपनी रणनीति के तहत मतदाताओं तक पहुंच रहे हैं। उन्हें अपने पक्ष में बनाए रखने की हर जुगत कर रहे हैं।

इसके लिए पार्टी के स्थानीय पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और समर्थकों के अलावा रिश्तेदारों, मित्रों और परिचितों का भी सहारा ले रहे हैं। उनकी मदद से हर मतदाताओं के चौखट पर पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए टोलियां बन गई हैं।

सभी अपने-अपने स्तर पर काम कर रहे हैं। काल, संदेश और सोशल मीडिया का भी सहारा ले रहे हैं। कुल मिलाकर सभी प्रत्याशी अपनी जीत पक्की करने की अंतिम चाल चल रहे हैं। उनका प्रयास कितना सफल होता है यह चुनाव परिणाम आने पर पता चलेगा, फिलहाल चुनावी माहौल का सभी आनंद ले रहे हैं।

नोएडा में बदली है ट्रैफिक व्यवस्था, घर से संभलकर निकलें...

लोकसभा चुनाव के मद्देनजर फेज-2 स्थित स्ट्रांग रूम के आसपास गुरुवार सुबह सात बजे से ट्रैफिक डायवर्जन लागू रहेगा। फूल मंडी से आज पोलिंग पार्टियां रवाना हो रही हैं। वहीं 26 अप्रैल को मतदान पूर्ण होने के बाद पोलिंग पार्टियां ईवीएम फूल मंडी में जमा करेंगी। इस कारण फूल मंडी के आसपास डायवर्जन रहेगा। ऐसे में इधर से गुजरने से परहेज करें।

नोएडा। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर फेज-2 स्थित फूल मंडी के ट्रैफिक डायवर्जन रहेगा। पोलिंग पार्टी द्वारा मतदान प्रक्रिया पूरी होने के बाद आज ईवीएम फूल मंडी में जमा की जाएगी। इससे डायवर्जन रहेगा। इससे पहले बृहस्पतिवार को भी फूलमंडी के आसपास ट्रैफिक डायवर्जन रहा।

बावजूद कई वाहन चालक फूल मंडी के आसपास पहुंच गए। इससे फूल मंडी से मतदान केंद्र तक रवाना हुई पोलिंग पार्टियों में सवार बसों में मौजूद मतदाकर्मियों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

मौके पर मौजूद यातायात कर्मी व्यवस्था बनाते रहे। डीसीपी ट्रैफिक यादव का कहना है कि फूल मंडी तिराहा से सेक्टर-88 कैंट आरओ चौक तक फूल मंडी के गेट नंबर-3, 4 व 2 के सामने मार्ग बंद रहेगा। चालक हेल्पलाइन नंबर-9971009001 पर संपर्क कर सकते हैं।

यह मार्ग आमजन के लिए रहेंगे प्रतिबंधित

सूरजपुर की ओर से कुलेसरा होकर फेज-2 नोएडा की ओर आने वाले डीएससी रोड पर समस्त प्रकार के मालवाहक चालकों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

भंगेल, जेपी फ्लाईओवर से गेझा तिराहे, एनएसइजेड होकर सूरजपुर की ओर जाने वाले डीएससी मार्ग पर समस्त प्रकार के मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

पंचशील, एल्डिको सेक्टर-93 की ओर से सेक्टर-83 याकूबपुर, सेक्टर-87 नयागांव, सेक्टर-88 कैंट आरओ चौक, एनएसइजेड, फेज-2 होकर सूरजपुर की ओर जाने वाले मार्ग पर समस्त प्रकार के मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

सोहरखा, सेक्टर-78 की ओर से ककराला फेज-2 होकर डीएससी मार्ग की ओर आने वाले मार्ग पर समस्त प्रकार के मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

ऐसा रहेगा यातायात

सूरजपुर से कुलेसरा डीएससी रोड होकर फेज-2 नोएडा की ओर जाने वाले समस्त प्रकार के मालवाहक वाहन कच्ची सड़क तिराहा से दाहिने टर्न कर इंडस्ट्रियल एरिया मार्ग ईकोटेक-3 होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

भगेल, जेपी फ्लाई ओवर से गेझा तिराहे होकर सूरजपुर की ओर डीएससी मार्ग पर जाने वाले समस्त प्रकार के मालवाहक वाहन गेझा तिराहा से दाहिने टर्न, यूटर्न कर नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे, परी चौक होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

फूल मंडी तिराहा से सेक्टर-88 चौक तक मार्ग बंद रहेगा। मार्ग से जाने वाला यातायात कोतवाली फेज-2 तिराहा से लावा कंपनी तिराहा होकर अपने गंतव्य को जा सकेगा।

पंचशील, एल्डिको सेक्टर-93 की ओर से सेक्टर-83 याकूबपुर, सेक्टर-87 नयागांव, सेक्टर-88 कैंट आरओ चौक, एनएसइजेड, फेज-2 होकर सूरजपुर की ओर जाने वाले मार्ग पर समस्त प्रकार के मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

सोहरखा, सेक्टर-78 से ककराला फेस-2 होकर डीएससी मार्ग की ओर जाने वाले समस्त प्रकार के मालवाहक वाहन पर्थला, किसान चौक, बिसरख होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

गाजियाबादः कल शाम चार बजे से हापुड़ रोड पर रहेगा डायवर्जन

कल शुक्रवार यानी 26 अप्रैल को मतदान के बाद गोविंदपुरम अनाज मंडी में ईवीएम रखे जाने की वजह से हापुड़ रोड पर डायवर्जन किया जाएगा। शाम चार बजे से हापुड़ चुंगी से अनाज मंडी की तरफ एवं डासना फ्लाईओवर से अनाज मंडी की तरफ भारी वाहनों की आवाजाही बंद रहेगी। हल्के वाहनों के लिए एनडीआरएफ कट और संतोष मैक्सवेल अस्पताल के बीच आवाजाही बंद रहेगी।

नहीं डालेंगे अपना वोट तो सरकार से कैसे कर सकेंगे सवाल?

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

पहले चरण के मतदान के दौरान देश के कई हिस्सों में कई मतदान केन्द्रों पर मतदान का बहिष्कार के समाचार भी देखने सुनने को मिले। यह भी अपने आप में सही विकल्प नहीं कहा जा सकता। आखिर मतदान का बहिष्कार कर हम अपना ही नुकसान कर रहे हैं।

18वीं लोकसभा के लिए पहले चरण का 21 राज्यों की 102 लोकसभा सीटों के लिए मतदान संपन्न हो चुका है। दूसरे चरण का मतदान 26 अप्रेल को देश के 13 राज्यों के 89 लोकसभा सीटों के लिए होने जा रहा है। पहले चरण का मतदान 2019 की तुलना में कम हुआ है। यह अपने आप में चिंतनीय हो जाता है। मतदान कम होने के कारणों का विश्लेषण करने का ना तो यह सही समय है और ना ही यह विश्लेषण का समय है कि मतदान कम होने से किसे लाभ होगा या किसे हानि होगी। लाभहानि का आकलन करना राजनीतिक दलों का विषय हो सकता है। पर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिकों द्वारा मताधिकार का उपयोग नहीं करना अपने आप में गंभीर हो जाता है। एक और हम निर्वाचित सरकार से अपेक्षाएं रखते हैं और रखनी भी चाहिए वहीं हम अपनी सरकार चुनने के लिए घर से मतदान करने के लिए भी निकलना अपनी तोहिन समझने लगते हैं। आखिर इतनी गैर जिम्मेदार नागरिक हम कैसे हो सकते हैं? यहां पर बरबस देश की सर्वोच्च अदालत की टिप्पणी पर ध्यान चला जाता है कि जब हम मतदान के दायित्व को पूरा नहीं कर सकते तो फिर चुनी हुई सरकार से सवाल करने या उससे किसी तरह की अपेक्षा रखने का हक भी हमें नहीं होना चाहिए। एक एनजीओ के द्वारा दायर पीएल को इसी भावार्थ के साथ खारिज कर दिया गया था। वैसे भी हमारा दायित्व हो जाता है कि लोकतंत्र के इस महापर्व में हम थोड़ा सा समय निकाल कर अपने मताधिकार का प्रयोग करें। पांच साल में एक बार मिलने वाले अवसर को नकारात्मक सोच या गैरजिम्मेदारी से खो देना किसी भी हालात में उचित नहीं माना जा सकता।

लोकतंत्र के महायज्ञ में प्रत्येक मतदाता को अपने मताधिकार का उपयोग कर मतदान करके अपनी आहुति देने का अवसर मिलता है। ऐसे में मतदान का बहिष्कार या फिर लापरवाही के कारण मतदान नहीं करना किसी अक्षम्य अपराध से कम नहीं कहा जा सकता है। वर्तमान सिनेरियों में नोटा प्रयोग भी मंथन का विषय होना चाहिए। नोटा के प्रवधान को लेकर पक्ष विपक्ष में अनेक तर्क दिए जा सकते हैं पर समय आ गया है कि उस पर बड़ी बहस हो और उसको अधिक प्रभावी या कारगर बनाने के प्रावधान किये जाये। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मतदान को लेकर की गई टिप्पणी भी इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाती है कि यदि हम मताधिकार का प्रयोग नहीं करते हैं तो फिर सरकार के खिलाफ किसी तरह की ग्रिवेंस करना उचित नहीं ठहराया जा सकता। सजग व जिम्मेदार नागरिक के रुप में प्रत्येक मतदाता का दायित्व हो जाता है कि वह अपने मताधिकार का प्रयोग करे। अब तो निर्वाचन आयोग ने मतदान सुविधाजनक भी बना दिया है। बुजुर्ग व दिव्याग मतदाताओं को घर बैठे मतदान का अवसर प्रदान कर दिया हैं वहीं मतदाताओं के लिए जागरुकता अभियान से लेकर निष्पक्ष चुनाव के लिए कारगर कदम उठाये जाने लगे हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने चुनाव तिथियों की घोषणा करते समय साफ कर दिया कि आयोग चार एम पर प्रभावी कार्यवाही करने को प्रतिवद्ध है और उसकी सूक्ष्म मोनेटरिंग की जा रही है।

भले ही सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद ईवीएम में नोटा यानी कि नन ऑफ द अवोव का प्रावधान कर दिया गया हो पर एक जागरुक व जिम्मेदार मतदाता के लिए नोटा के प्रयोग को समझदारी भरा निर्णय नही माना जा सकता। कारण साफ है नोटा का बटन दबाकर अपनी भावना तो व्यक्त कर सकते हैं पर उसका इस मायने में कोई अर्थ नहीं रहता कि किसी की जीत हार में उसका असर नहीं पडता। नोटा के प्रयोग के स्थान पर उपलब्ध विकल्पों में से ही किसी एक को चुनना ज्यादा बेहतर माना जा सकता है। हांलाकि एक समय था जब कई बूथों पर विरोध स्वरुप मतदान का बहिष्कार करने का निर्णय कर लिया जाता था या फिर लोगों द्वारा उपलब्ध उम्मीद्वारों में किसी को भी मत देने योग्य नहीं समझने के कारण विरोध का मत यानी कि नोटा के प्रयोग की

लोकतंत्र के महायज्ञ में प्रत्येक मतदाता को अपने मताधिकार का उपयोग कर मतदान करके अपनी आहुति देने का अवसर मिलता है। ऐसे में मतदान का बहिष्कार या फिर लापरवाही के कारण मतदान नहीं करना किसी अक्षम्य अपराध से कम नहीं कहा जा सकता है।

मांग की जाती रही। नोटा का परिणाम प्रभावी तरीके से राइट टू रिजेक्ट होता तो अधिक कारगर होता। तस्वीर का दूसरा पक्ष यह भी है कि अमेरिका सहित दुनिया के कई देशों में उसकी कारगरता के अभाव के कारण नोटा के प्रावधान को हटाया जा चुका है। यों कहे कि कई देषों में नोटा के प्रावधानों को कारगर नहीं पाने के कारण हटा दिया गया है। अमेरिका की ही बात करें तो वहां नोटा का प्रावधान रहा है पर 2000 आते आते उसे हटा दिया गया। इसी तरह से रुस ने 2006 और पाकिस्तान में 2013 में नोटा प्रावधान को हटाया जा चुका है। देश के प्रबुद्ध नागरिकों, वुद्धिजीवियों, राजनीतिक विश्लेषकों, कानूनविद् को नोटा को लेकर गंभीर बहस छेड़नी होगी जिससे नोटा को वास्तव में चुनावों में हथियार के रुप में उपयोग किया जा सके। आज की तारीख में बात करें तो नोटा केवल और केवल आपके विरोध को दर्ज कराने तक ही सीमित माना जा सकता है।

पहले चरण के मतदान के दौरान देश के कई हिस्सों में कई मतदान केन्द्रों पर मतदान का बहिष्कार के समाचार भी देखने सुनने को मिले। यह भी अपने आप में सही विकल्प नहीं कहा जा सकता। आखिर मतदान का बहिष्कार कर हम अपना ही नुकसान कर रहे हैं। बहिष्कार से कुछ हासिल होना नहीं है। बल्कि आप जिस किसी से भी नाराज है तो उसके खिलाफ मतदान कर अपनी बात को रख सकते हैं। ऐसे में मतदान का बहिष्कार या नोटा का प्रयोग के स्थान पर मतदान अवश्य करना चाहिए। पहले चरण के कम मतदान को लेकर यह कहा जा रहा है कि गर्मी तेज थी, जागरुकता का अभाव, शादी विवाह होना या मुद्दों का ना होना जैसी बात की जा रही है पर यह सब बहाने निरर्थक है। मतदान केन्द्र कुछ ही दूरी पर है तो जागरुकता की जिम्मेदारी हमारी है। चुनाव आयोग लगातार जागरुक करने के साथ ही अब तो राजनीतिक दलों पर निर्भरता भी पूरी तरह से समाप्त कर दी है। शादी विवाह होने के बावजूद हमें समय निकाल कर मतदान तो करना ही चाहिए।

एक दूसरी बात और जिस पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है। आजादी के 75 साल बाद और दुनिया की सबसे बेहतरीन चुनाव व्यवस्था के बावजूद मतदान प्रतिशत 90 से 100 प्रतिशत के आंकड़े को नहीं छूना चिंता का विषय है। आज हालात बदल चुके हैं। कोई भी किसी को मतदान के अधिकार से जोर जबरदस्ती या अन्य कारण से रोक नहीं सकता। भारतीय चुनाव आयेग की निष्पक्ष चुनाव व्यवस्था को सारी दुनिया द्वारा सराहा जाता है और लोहा मानते हैं। इस सबके बावजूद मतदान का प्रतिशत कम होना गंभीर है। ऐसे में मतदान का बहिष्कार या मतदान नहीं करना जिम्मेदार मतदाता का काम नहीं हो सकता। पांच साल में एक बार आने वाले इस अवसर का उपयोग सकारात्मक सोच व उपलब्ध विकल्पों के आधार पर ही बेहतर तरीके से किया जा सकता है। इसलिए मतदान को अपना कर्तव्य समझ कर घर से बाहर निकलें और मताधिकार का उपयोग अवश्य करें यह सभी मतदाताओं के दिलोदिमाग में होना चाहिए। गैरसरकारी संगठनों व मीडिया को भी इसके लिए आगे आना चाहिए ताकि हम कह सके कि यह सरकार कम मतदान प्रतिशत के आधार पर चुनी हुई नहीं हैं। जिस तरह से रोजमर्रा के काम जरुरी है उसी तरह से हमें मतदान को समझना होगा और बाकी 26 अप्रेल और इसके बाद के चरणों के मतदान पर्व को पर्व की तरह ही मनाना होगा।

अल्ट्रावॉयलेट F77 Mach 2 में हुए हैं ये 5 बड़े बदलाव, जानिए पहले से कितनी अलग

परिवहन विशेष न्यूज

Ultraviolette पहले की तरह ही F77 को 3 परसोना में पेश करेगी जिसमें एयरस्ट्राइक लेजर और शैडो शामिल है। शैडो को स्टील्थ ग्रे एस्टेरॉयड ग्रे और कॉस्मिक ग्रे पेंट स्कीम में पेश किया जाएगा। Ultraviolette F77 Mach 2 को पावर और टॉर्क के आंकड़ों में थोड़ी बढ़त हासिल हुई है। Ultraviolette F77 Mach 2 की अब शुरुआती कीमत 2.99 लाख रुपये एक्स-शोरूम है।

नई दिल्ली। Ultraviolette को देश की सबसे तेज-तर्रार Electric Bike बनाने के लिए जाना जाता है। ब्रांड ने हाल ही में अपडेटेड Ultraviolette F77 को लॉन्च किया है, जिसे F77 Mach 2 नाम दिया गया है। इंडियन मार्केट इसे कुल 2 वेरिएंट में बेचा जाएगा। आइए, जान लेते हैं कि इसमें पहले से क्या कुछ नया है।

नया कलर

Ultraviolette पहले की तरह ही F77 को 3 परसोना में पेश करेगी, जिसमें एयरस्ट्राइक, लेजर और शैडो शामिल है। शैडो को स्टील्थ ग्रे, एस्टेरॉयड ग्रे और कॉस्मिक ग्रे पेंट स्कीम में पेश किया जाएगा। वहीं, लेजर को प्लाज्मा रेड, टर्बो रेड और आफ्टरबर्नर येलो कलर मिला है। एयरस्ट्राइक को स्टेलर व्हाइट, सुपरसोनिक सिल्वर और लाइटनिंग ब्लू के साथ पेश किया गया है।

परफॉरमेंस

Ultraviolette F77 Mach 2 को पावर और टॉर्क के आंकड़ों में थोड़ी बढ़त हासिल हुई है। पावर आउटपुट अब 40 बीएचपी है, जबकि टॉर्क आउटपुट 100 एनएम है। इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल 3 राइडिंग मोड्स - ग्लाइड, कॉम्बैट और बैलिस्टिक के साथ आती रहेगी। यह 2.8 सेकंड में 0-60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकती है।

चार्जिंग और रेंज

बैटरी पैक 10.3 kWh यूनिट है, लेकिन अब स्टैंडर्ड और रिकॉन वर्जन को 211 किमी और 323 किमी की आईडीसी-क्लेम्ड रेंज मिलती है। कंपनी इसके लिए एक स्टैंडर्ड चार्जर और एक बूस्ट चार्जर देती है। इसमें एक सुपरनोवा चार्जर भी है, जो केवल एक घंटे में बैटरी पैक को 20 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक चार्ज कर सकता है।

किफायती दाम

Ultraviolette F77 Mach 2 की अब शुरुआती कीमत 2.99 लाख रुपये एक्स-शोरूम है, जबकि F77 Mach 2 Recon की शुरुआती कीमत 3.99 लाख रुपये एक्स-शोरूम है। आपको बता दें कि ये इंट्रोडक्टरी प्राइस हैं और केवल पहले 1,000 ग्राहकों के लिए ही लागू होंगे। आप इसे 5000 रुपये देकर बुक कर सकते हैं।

Violette AI

Ultraviolette ने नए लॉन्च के साथ Violette AI को भी इंट्रोड्यूस किया है। इसमें मूवमेंट, फॉल और टोइंग अलर्ट, रिमोट लॉकडाउन, क्रैश अलर्ट, डेली राइड स्टैट्स और एक एंटी-कोलिजन वार्निंग सिस्टम जैसे फीचर्स मिलते हैं। ये फीचर्स मोबाइल एप्लिकेशन के साथ मिलकर भी काम करते हैं।

Performance Pack

अल्ट्रावायलेट ने एक नया परफॉर्मेंस पैक पेश किया है। इसमें डायनेमिक रीजन और ट्रैक्शन कंट्रोल शामिल है। इसे रीजन मोड के लिए टेन लेवल और ट्रैक्शन कंट्रोल के लिए 4 लेवल दिए गए हैं। कंपनी की ओर से पहले 1,000 ग्राहकों को बिना किसी अतिरिक्त लागत के परफॉर्मेंस पैक मिलेगा।

हुंडई क्रेटा की मुश्किलें बढ़ाने आ रही हैं ये 2 नई एसयूवी! यहां जानिए लॉन्च डिटेल्स

Citroen का C3 Aircross के बाद Hyundai Creta को टक्कर देने के लिए एक नई एसयूवी लॉन्च करने का प्लान है। इस कूप-एसयूवी को विशेष रूप से दक्षिण अफ्रीकी और भारतीय बाजार के लिए विकसित किया गया है। Tata Curvv को आखिरी बार भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2024 में इसके प्रोडक्शन-रेडी वर्जन में देखा गया था। टाटा कर्व को 2024 के मध्य में लॉन्च किया जाना है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय ऑटोमोटिव बाजार में मिड साइज एसयूवी सेगमेंट सबसे आगे है। इस सेगमेंट की गाड़ियों की सबसे ज्यादा मांग है और इस वजह से यहां कंपटीशन भी बढ़ गया है। कोरियन कार कंपनी Hyundai की Creta SUV मौजूदा समय में सेगमेंट लीडर बनी हुई है। इसे टक्कर देने के लिए जल्द ही इंडियन मार्केट में दो नई एसयूवी एंट्री मारने वाली हैं। आइए, इनके बारे में जान लेते हैं।

Tata Curvv

Tata Curvv को आखिरी बार भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2024 में इसके प्रोडक्शन-रेडी वर्जन में देखा गया था। टाटा कर्व को 2024 के मध्य में लॉन्च किया जाना है। ऑल-इलेक्ट्रिक कर्व के बाद इसका पारंपरिक रूप से संचालित पेट्रोल/डीजल संस्करण भी पेश किया जाएगा। कर्व के एक्सटीरियर डिजाइन में एक परिचित फ्रंट फेसिया, फ्लश डोर हैंडल, 18 इंच अलॉय व्हील और एक कूपे रूफ होगी।

फीचर्स की बात करें, तो इसे इल्युमिनेटेड टाटा लोगो के साथ फोर-स्पोक स्टीयरिंग व्हील, फ्री-स्टैंडिंग 12.3-इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25-इंच पूरी तरह से डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल और वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स दी जाएंगी।

Citroen Basalt Coupe-SUV

Citroen का C3 Aircross के बाद Hyundai Creta को टक्कर देने के लिए एक नई एसयूवी लॉन्च करने का प्लान है। इस कूप-एसयूवी को विशेष रूप से दक्षिण अफ्रीकी और भारतीय बाजार के लिए विकसित किया गया है। हाल ही में सिट्रोएन बेसाल्ट विजन कॉन्सेप्ट का प्रोडक्शन-रेडी वर्जन सामने आया था। 2024 की दूसरी छमाही में घरेलू बाजार में लॉन्च के लिए निर्धारित, क्रेटा प्रतिद्वंद्वी कूप-एसयूवी को देश में संभवतः C3X नाम दिया जाएगा।

सी3 एयरक्रॉस के समान प्लेटफॉर्म पर आधारित, यह 1.2 लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन द्वारा संचालित होगी, जो 110 बीएचपी और 205 एनएम का पीक टॉर्क उत्पन्न करेगा। 6-स्पीड मैनुअल के अलावा, ऑफर पर टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक गियरबॉक्स भी होगा। सिट्रोएन बेसाल्ट कूप-एसयूवी घरेलू बाजार में आने वाली टाटा कर्व को टक्कर देगी।

पाक ऑटो इंडस्ट्री धड़ाम! पड़ोसी मुल्क ने महीने भर में बेची जितनी गाड़ियां, भारतीयों ने उतनी एक दिन में खरीद डालीं

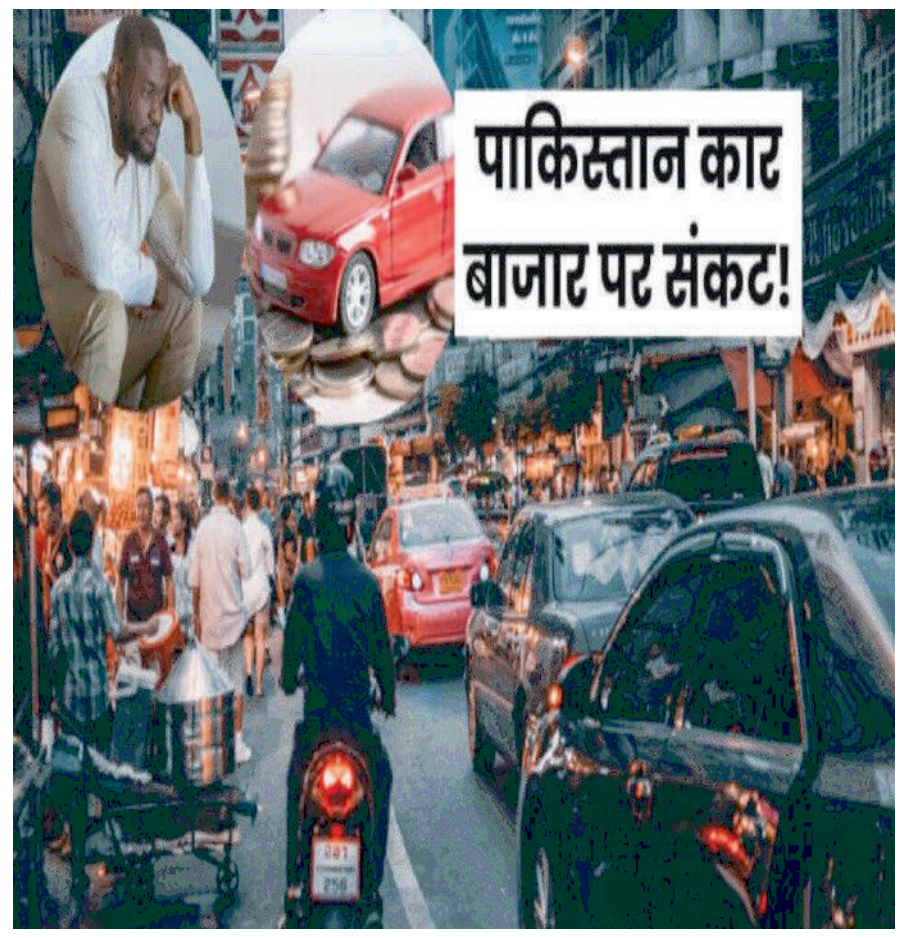

परिवहन विशेष न्यूज

पाकिस्तान ऑटोमोटिव मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन(PAMA) द्वारा साझा किए गए मासिक बिक्री आंकड़ों के अनुसार मार्च 2024 में देश में यात्री वाहन की बिक्री 7672 यूनिट रही जो पिछले साल इसी महीने में बेची गई गाड़ियों की तुलना में 6.1 प्रतिशत कम है। वैसे तो पाकिस्तान की भारत से कोई तुलना ही नहीं फिर भी अगर आंकड़ो की बात करें तो दोनों में धरती और आसमान का अंतर है।

नई दिल्ली। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति लगातार बद से बदतर होती होती जा रही है। पाकिस्तान ऑटोमोटिव मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन(PAMA) द्वारा साझा किए गए मासिक बिक्री आंकड़ों के अनुसार, मार्च 2024 में देश में यात्री वाहन की बिक्री 7,672 यूनिट रही, जो पिछले साल इसी महीने में बेची गई गाड़ियों की तुलना में 6.1 प्रतिशत कम है।

खस्ताहाल हुई पाक ऑटो इंडस्ट्री

जहां दुनिया भर में ऑटोमोटिव उद्योग बढ़ती इनपुट लागत, समग्र मुद्रास्फीति से जूझ रहे हैं, वहीं पाकिस्तानी खरीदारों के पास हाल ही में अर्थव्यवस्था की खराब स्थिति, मुद्रा में गिरावट और वाहन खरीद पर भारी टैक्स वसूलने जैसी चुनौतियां भी हैं। इसके अलावा लोगों को गाड़ी खरीदने पर आसानी से लोन भी नहीं मिल पा रहा है।

इंडियन कार मार्केट पूरी तरह से गुलजार है। वैसे तो पाकिस्तान की भारत से कोई तुलना ही नहीं, फिर भी अगर आंकड़ो की बात करें तो दोनों में धरती और आसमान का अंतर है। इंडियन ऑटो मार्केट में केवल 24 मार्च को ही 3.69 लाख से अधिक कारें बेची गईं।

भारत और पाक में धरती-आसमान का अंतर

सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (SIAM) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, मार्च 2023 में पिछले साल इसी महीने में बेची गई 3,35,976 यूनिट्स की तुलना में 10 प्रतिशत की पर्याप्त वृद्धि दर्ज की गई है।

धीरे-धीरे कारोबार समेट रही कंपनियां

यह स्पष्ट है कि दक्षिणी एशिया क्षेत्र में ऑटोमोटिव निर्माताओं के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और पाकिस्तान उभरती गतिशीलता के साथ तालमेल बिठाने के लिए संघर्ष कर रहा है। दरअसल, कई प्रमुख निर्माताओं ने पहले ही देश में अपना परिचालन बंद कर दिया है, जबकि ऐसी अफवाह है कि यदि स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो अन्य लोग बाहर निकलने पर विचार कर रहे हैं।

कार टिप्स : इन चार गलतियों से कम हो सकती है आपकी इलेक्ट्रिक कार की रेंज, जानें डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

भारत सहित दुनियाभर में Electric Car को काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। देश में भी कई कंपनियों की ओर से बेहतर फीचर्स और रेंज के साथ ईवी को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इलेक्ट्रिक कार की सवारी करते हैं और गाड़ी की Range बेहतर है तो किन चार गलतियों (Car Tips) को करने से बचना चाहिए। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। बाजार में इलेक्ट्रिक कारों की काफी मांग रहती है। कई कंपनियों की ओर से ज्यादा रेंज के साथ Electric Cars को ऑफर भी किया जाता है। लेकिन अगर आपकी EV भी बेहतर Range ऑफर करती है, तो किन चार गलतियों के कारण रेंज कम होने का खतरा बढ़ जाता है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

तेज स्पीड से कम होगी रेंज

Electric Car से बेहतर Range लेने का सबसे आसान तरीका है कि गाड़ी को हमेशा नियंत्रित स्पीड में ही चलाना चाहिए। अगर कार को तेज स्पीड में चलाया जाता है तो इससे रेंज कम होने लगती है। लंबे समय तक ऐसे ही गाड़ी के उपयोग के कारण बैटरी को नुकसान भी होता है और बैटरी जल्दी ड्रेन होने लगती है। इसके साथ ही मोटर पर भी बुरा असर होता है और उसमें भी खराबी का खतरा बढ़ जाता है।

ज्यादा सामान के साथ न करें सफर

अगर आप इलेक्ट्रिक कार चलाते हैं और उससे बेहतर रेंज आपको मिलती है, तो कभी भी आपको क्षमता से ज्यादा सामान के साथ सफर नहीं करना चाहिए। कई बार लोग अपनी इलेक्ट्रिक कार में क्षमता से ज्यादा सामान रखते हैं या फिर कई बार क्षमता से ज्यादा यात्रियों के साथ भी सफर किया जाता है। जिससे रेंज कम होने लगती है।

पूरी बैटरी का न करें उपयोग

इलेक्ट्रिक कार में कभी भी बैटरी को पूरा उपयोग में नहीं लाना चाहिए। हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि गाड़ी में जब बैटरी 10 से 20 फीसदी तक रह जाए तो उसे चार्ज करना चाहिए। ऐसा करने से बैटरी की रेंज को बरकरार रखने में मदद मिलती है। लेकिन अगर इसे बार-बार चार्ज किया जाए तो भी बैटरी को नुकसान होता है और रेंज में कमी आने लगती है।

न करें फास्ट चार्जर का उपयोग

इलेक्ट्रिक कार में अगर आप लगातार फास्ट चार्जर का उपयोग करते हैं, तो भी यह लंबे समय में बैटरी को काफी ज्यादा नुकसान पहुंचाता है। ऐसा करने से कार चलाने पर बैटरी की क्षमता प्रभावित होती है और इसका नतीजा यह होता है कि बैटरी की रेंज कम होने लगती है। कोशिश करें कि इलेक्ट्रिक कार को ज्यादा से ज्यादा सामान्य चार्जर से चार्ज करें। इससे बैटरी की उम्र लंबी और रेंज बरकरार रखी जा सकती है।

गुरु, गोविंद दोऊ खड़े

स्पिरिचुअल हीलर
सिद्धगुरु प्रमोद जी

संत कबीर का प्रसिद्ध दोहा : 'गुरू, गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय, बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविंद दियो बताय', हम सबने सुन रखा है। पंद्रहवीं शताब्दी के महान कवि और संत कबीर जी के सधुक्कड़ी एवं पंचमेल की खिचड़ी में रचे दोहे जनमानस में लोकप्रिय तो हैं ही, प्रेरणा का बड़ा स्रोत भी हैं। संत कबीर ने हर धर्म और वर्ग को सीख दी है।

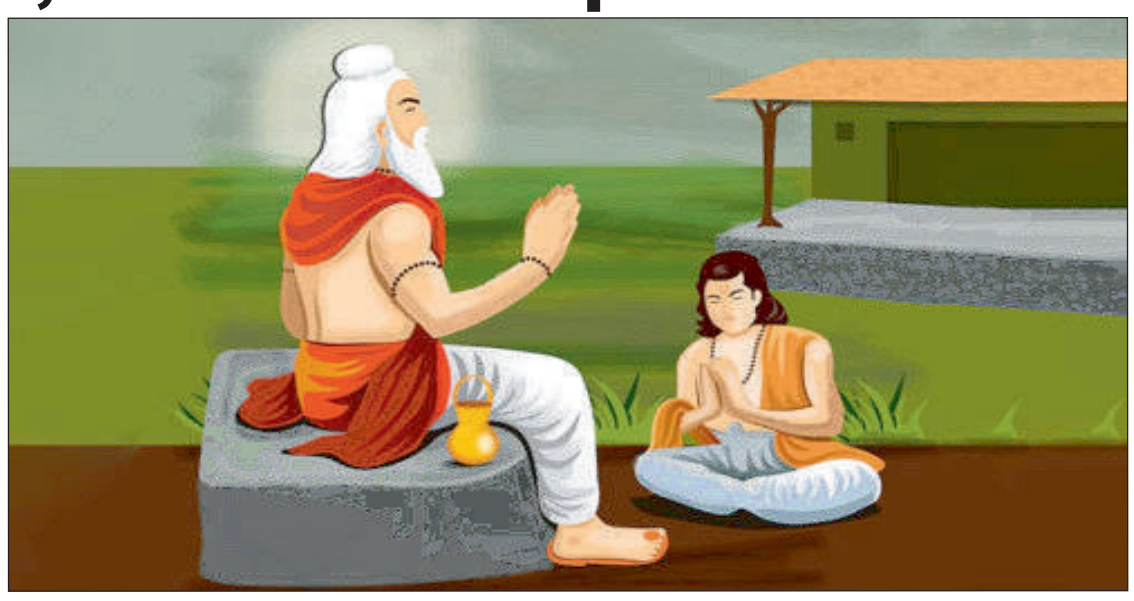

हम कोई एक रास्ता चुनते हैं, लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि बाकी रास्ते गलत हैं। हम किसी एक देश के किसी एक राज्य के किसी एक शहर के किसी एक परिवार में जन्म लेते हैं। उस देश के उस राज्य के उस शहर के उस परिवार की मान्यताएं हमें प्रभावित करती हैं, इसलिए हम अध्यात्म का या परमात्मा का कोई एक रास्ता चुन लेते हैं। इसी तरह हर दूसरा व्यक्ति अपने देश, काल, समाज और परिवार की मान्यताओं के अनुसार कोई और रास्ता चुन लेता है। तो स्पष्ट है कि सभी रास्ते परमात्मा तक पहुंचने के लिए हैं, और सभी रास्ते सही हैं। हर सच्चा गुरु यही सिखाता है क्योंकि यही सच भी है'

संत कबीर का प्रसिद्ध दोहा : 'गुरू, गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय, बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविंद दियो बताय', हम सबने सुन रखा है। पंद्रहवीं शताब्दी के महान कवि और संत कबीर जी के सधुक्कड़ी एवं पंचमेल की खिचड़ी में रचे दोहे जनमानस में लोकप्रिय तो हैं ही, प्रेरणा का बड़ा स्रोत भी हैं। संत कबीर ने हर धर्म और वर्ग को सीख दी है। वे एक ऐसे संत थे जिन्होंने दिखावे के फालतू कर्मकांड को नकारा और सहज जीवन की व्याख्या की। गुरू की महत्ता पर उन्होंने कई दोहे रचे। अपने सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रचलित दोहे में उन्होंने गुरू को नमन करते हुए कहा कि अगर गुरू और भगवान दोनों साथ-साथ खड़े हों तो मैं पहले गुरू को नमन करूंगा क्योंकि भगवान तक पहुंचने का रास्ता गुरू ने ही दिखाया है। गुरू की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए संत कबीर ने कहा कि 'गुरू बिन ज्ञान न ऊपजै, गुरू बिन मिलै न मोष, गुरू बिन लखै न सत्य को, गुरू बिन मिटै न दोष', यानी बिना गुरू के ज्ञान का मिलना असम्भव है। तब तक मनुष्य अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता हुआ मायारूपी सांसारिक बन्धनों में जकड़ा रहता है जब तक कि गुरू की कृपा प्राप्त नहीं होती। मोक्ष रूपी मार्ग दिखलाने वाले गुरू हैं। बिना गुरू के सत्य एवं असत्य का ज्ञान नहीं होता, उचित और अनुचित के भेद का ज्ञान नहीं होता, फिर मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? अतः गुरू की शरण में जाओ, गुरू ही सच्ची राह दिखाएंगे। इतना ही नहीं, संत कबीर ने यह भी कहा कि गुरू और पारस के अंतर को सभी ज्ञानी पुरुष जानते हैं, पारस मणि के विषय में जग विख्यात है कि उसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है, किन्तु गुरू तो इतने महान हैं कि अपने गुण-ज्ञान में ढालकर शिष्य को अपने जैसा ही महान बना लेते हैं। 'गुरू पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत, वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत', में संत कबीर ने यही कहा है।

स्पष्ट है कि किसी समर्थ गुरू के मार्गदर्शन के बिना आध्यात्मिक जगत में जाने का इच्छुक व्यक्ति यूं ही गोल-गोल घूमता रह सकता है। गुरू ही सीधा और सरल मार्ग दिखा सकते हैं। संतों की महिमा इसीलिए है, जिसे हर धर्म ने स्वीकार किया है। परेशानी इसके बाद हुई जब गुरू को ही भगवान मान लिया गया। गुरू के नाम की माला पहन ली गई, गुरू की आरती शुरू हो गई और भगवान बिसर गए। कबीर दास जी ने जब 'काके लागूं पांय' कहा तो सिर्फ ये समझाना चाहा कि गुरू के बिना ज्ञान नहीं मिलता, लेकिन ज्ञान तो परमात्मा का मिलता है न? फिर परमात्मा की महत्ता कम कैसे हो गई? गुरू, सिर्फ गुरू है, गोविंद नहीं, राह तो गोविंद तक जाने की है, परमात्मा तक जाने की है। गुरू भगवान नहीं है। गुरू नानक देव जी ने हर जगह राम-राम जपा है। दसों गुरुओं ने राम के गुण गाए हैं, अपने नहीं। संत रविदास ने राम के गुण गाए हैं, अपने नहीं। बाकी संतों ने भी परमात्मा के ध्यान की बात कही है, किसी भी सच्चे गुरू ने कभी नहीं कहा कि मुझे पूजो। किसी भी सच्चे गुरू ने कभी नहीं कहा कि भगवान को छोडक़र मेरी माला जपो। 'सहज संन्यास मिशन' में भी हम यही कहते हैं कि कोई गुरू आपको अध्यात्म की सीढियां चढना तो सिखा सकता है, पर वह आपका कोच है, आपका ट्रेनर है, आपका मैंटॉर है, और हम सब भगवान का प्रतिरूप हैं, इस रूप में गुरू भी भगवान है, पर भगवान का विकल्प नहीं है, परमात्मा का सब्स्टीट्यूट नहीं है। हम फिर सिर्फ गुरू को ही भगवान मानकर नहीं पूजते, बल्कि इस ब्रह्मांड की हर जड़-चेतन वस्तु में भगवान के दर्शन करते हैं। हर धर्म की तरह 'सहज संन्यास मिशन' की भी यही मान्यता है कि परमात्मा को हम किसी भी नाम से पुकारें, या किसी भी रूप में पहचानें, परमात्मा एक ही है और इसी एक कारण से घट-घट में है, सर्वव्यापी है कि हर जड़-चेतन वस्तु उसी एक ऊर्जा का प्रतिरूप है। खुद परमात्मा भी इसी रूप में अभिव्यक्त है।

परमात्मा को पाने के लिए किसी पूजा-स्थल की आवश्यकता नहीं है, किसी मूर्ति की आवश्यकता नहीं है। मैं परमात्मा का प्रतिरूप हूं, मैं खुद ही परमात्मा हूं, अहम्ब्रह्मास्मि! पर, इस सच को शायद हम खुद न समझ पाते, गुरू ने हमें इस सच से परिचित करवाया, गुरू का शुक्रिया। हम गुरू के ऋणी हैं, हम गुरू का सत्कार करते हैं, हम गुरू के मार्गदर्शन के लिए उनके अनुगृहीत हैं, पर हम परमात्मा को छोडक़र सिर्फ गुरू में ही भगवान देखेंगे तो हमने खुद को सीमित कर लिया, खुद को एक और दायरे में बांध लिया। अध्यात्म हमें किसी दायरे में नहीं बांधता, किसी बंधन में नहीं जकड़ता, किसी पिंजरे में बंद नहीं करता। अध्यात्म तो स्वतंत्रता का दूसरा नाम है। घट-घट में भगवान का यही अर्थ है कि हम सब परमात्मा का प्रतिरूप हैं, हम सबमें परमात्मा है, वह किसी एक मूर्ति, किसी एक ग्रंथ, या किसी एक व्यक्ति जितना छोटा नहीं है। यही कारण है कि परमात्मा की पूजा के लिए किसी बाहरी प्रतीक पर निर्भर रहने के बजाय जब हम अंदर की यात्रा शुरू करते हैं तो आध्यात्मिक हो जाते हैं और परमात्मा का सान्निध्य नित्य की बात हो जाती है। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि पूजा सिर्फ तभी पूजा है जब हम प्रेममय हो जाते हैं, देश, धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र की बात छोडक़र हर व्यक्ति से प्रेम करने लगते हैं, बिना कारण प्रेम करने लगते हैं, और व्यक्ति से ही नहीं, हर वस्तु से प्रेम करने लगते हैं, हर जड़-चेतन जीवन का सम्मान करने लगते हैं, बिना कारण, बिना लालच, बिना किसी डर के।

यह जीवनशैली अपना लें तो मन हमेशा प्रसन्न-प्रफुल्लित रहता है। जब हम प्रेममय हो जाते हैं तो शिकायतें खत्म हो जाती हैं, किसी बात का गिला नहीं रह जाता, क्रोध नहीं रह जाता, पछतावा नहीं रह जाता, इन सबकी जगह कृतज्ञता का भाव आ जाता है, समर्पण का भाव आ जाता है, सेवा का भाव आ जाता है। इस तरह हम अध्यात्म की कई सीढियां चढ़ जाते हैं। हम आध्यात्मिक होते हैं तो ब्रह्मांड से जुड़ जाते हैं, परमात्मा से जुड़ जाते हैं। परमात्मा को हम किसी भी नाम से पुकारें, किसी भी रूप में देखें, किसी भी रूप में महसूस करें, पर परमात्मा सिर्फ एक है, लेकिन परमात्मा तक पहुंचने के कई रास्ते हैं। हम कोई एक रास्ता चुनते हैं, लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि बाकी रास्ते गलत हैं। हम किसी एक देश के किसी एक राज्य के किसी एक शहर के किसी एक परिवार में जन्म लेते हैं। उस देश के उस राज्य के उस शहर के उस परिवार की मान्यताएं हमें प्रभावित करती हैं, इसलिए हम अध्यात्म का या परमात्मा का कोई एक रास्ता चुन लेते हैं। इसी तरह हर दूसरा व्यक्ति अपने देश, काल, समाज और परिवार की मान्यताओं के अनुसार कोई और रास्ता चुन लेता है। तो स्पष्ट है कि सभी रास्ते परमात्मा तक पहुंचने के लिए हैं, और सभी रास्ते सही हैं। हर सच्चा गुरू यही सिखाता है क्योंकि यही सच भी है।

गिन्नीज विश्व रिकार्ड विजेता लेखक

संपादक की कलम से

क्यों बदल गए प्रधानमंत्री

यह लोकसभा का चुनाव है, नकि किसी धार्मिक संस्थान के लिए चुनाव कराया जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी को सांप्रदायिक बयान देने को बाध्य होना पड़ा, उसकी उलट प्रतिक्रिया में करीब 2000 शिकायतें चुनाव आयोग को भेजी गई हैं। कांग्रेस ने जो 17 शिकायतें की हैं, वे इनसे भिन्न हैं। प्रधानमंत्री मोदी के बयान पर आयोग क्या निर्णय लेता है, उससे उसकी निष्पक्षता और विश्वसनीयता जुड़ी है। 2019 के आम चुनाव के दौरान भी प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ 6 शिकायतें दर्ज की गई थीं, लेकिन चुनाव आयोग ने उन्हें 'क्लीन चिट' दे दी। इस पर चुनाव आयोग की तीखी आलोचना की गई थी। हालांकि मतदान और मतदाता से जुड़े 'भारतीय जनप्रतिनिधित्व कानून, 1951' में ऐसी धाराएं भी हैं, जिनके तहत ऐसी शिकायतों पर दंडनीय कार्रवाई की जा सकती है, लेकिन हमारी व्यवस्था 'दंतहीन' है। आज एक बार फिर मुख्य चुनाव आयुक्त रहे टीएन शेषन की याद आ रही है, जिन्होंने साबित कर दिया था कि चुनाव आयोग के पास हथियार, अधिकार और पैने दांत भी हैं। वह सत्ता-पक्ष का 'पायदान' नहीं है। बहरहाल इन शिकायतों के निपटारे से अहम देश के प्रधानमंत्री का व्यक्तित्व है। वह समूचे राष्ट्र के हैं, तो सभी धर्मों, संप्रदायों, नस्लों, मतों, लिंगों और भाषाओं के भी हैं। बेशक उनका निजी धर्म और आस्था हिंदुत्व से जुड़ा है, लेकिन जब वह देश को संबोधित कर रहे होंगे या आह्वान कर रहे होंगे, तो वह पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष होंगे। प्रधानमंत्री किसी एक धर्म के प्रचारक या समर्थक नहीं हो सकते। दरअसल प्रथम चरण के कम मतदान के बाद प्रधानमंत्री मोदी की जुबां, भाषा, आह्वान और तेवर बदल गए हैं। आजकल प्रधानमंत्री राम मंदिर, काशी और ब्रज, रामनवमी, हनुमान चालीसा, मंगलसूत्र और हिंदू बनाम मुसलमान के मुद्दों पर वोट मांग रहे हैं। अलबत्ता प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 10-साला कार्यकाल के दौरान अधिकतर विकास, 5वीं से तीसरी वैश्विक अर्थव्यवस्था और अंततः 2047 तक 'विकसित भारत' की बात कही है। दुनिया में भारत की हैसियत की व्याख्याएं की हैं। इस बार 2024 का जनादेश वह 'विकसित भारत' का संकल्प हासिल करने की रूपरेखा तैयार करने के लिए मांग रहे हैं। अचानक यह बदलाव क्यों आया कि देश के प्रधानमंत्री राम नाम, श्रीकृष्ण जन्मभूमि और हनुमान चालीसा की चिंता करने लगे हैं और देश की करीब 15 फीसदी मुस्लिम आबादी को 'घुसपैठिया' करार देने लगे हैं। क्या प्रधानमंत्री भाजपा के कट्टर और सनातन मतदाता के समर्थन के लिए बदल रहे हैं? प्रधानमंत्री अर्थव्यवस्था, विकास दर, विश्व की आर्थिक महाशक्ति, विश्व का सबसे विशाल मैन्यूफैक्चरिंग हब, सेमीकंडक्टर चिप्स का निर्माता, विमान और हेलीकॉप्टर निर्माण में आत्मनिर्भरता, जी-20, जी-7, सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता आदि महत्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दों को या तो भूल गए हैं अथवा नेपथ्य में डाल दिया है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला गैस, नल में जल, शौचालय, जन-धन खाते, बिजली, चमकदार राजमार्गों, विश्वकर्मा योजना, कौशल विकास, 220 करोड़ मुफ्त कोरोना टीकों आदि का जिक्र भी बहुत कम करते हैं। ऐसा लगता है मानो किसी ने 'दहशत का बटन' दबा दिया है और प्रधानमंत्री को हिंदुत्व पर ज्यादा आक्रामक होना पड़ा है।

शायद प्रधानमंत्री को एहसास हो गया है कि विकास और बढ़ोतरी के मुद्दे पर वोट कम मिलेंगे तथा आक्रामक धार्मिकता से ध्रुवीकरण होगा और बहुसंख्यकों के बहुमत के वोट भाजपा-एनडीए के पक्ष में आएंगे! प्रथम चरण के मतदान के ठोस संकेत, अपने-अपने माध्यमों से, मिल चुके हैं। भाजपा अब भी दौड़ में सबसे आगे है। कई सीटों पर मुकाबले बेहद कांटेदार हैं। अलबत्ता भाजपा के चेहरे से 400 पार की खुशी कुछ गायब लग रही है। मोदी-विरोधी लहर की खुशी विपक्ष के चेहरों पर भी मद्धिम पड़ गई है। मतदान अब भी कम हो सकता है, क्योंकि दूसरे चरण की जिन 89 सीटों पर 26 अप्रैल को मतदान होना है, उसमें कमोबेश 30 सीटों पर गरम लू का मौसम होगा। क

राय

ढर्रे में मशगूल कब तक

हिमाचली नजरिए के सूत्रधार हर चुनाव को पुकारते हैं, लेकिन बहुत कम ऐसे चेहरे हैं जिन्हें मुकम्मल जहां मिलता है। विधायक प्राथमिकताओं के अक्स में हमारे प्रतिनिधि उन्हीं घिसे-पिटे मंतव्यों के पीछे भागते हुए नजर आते हैं। वर्षों बाद भी हम पर्यटन की वकालत में सिर ढूंढते हैं, लेकिन यह नहीं सोच पाए कि इस क्षेत्र में अति अव्वल होने की प्राथमिकता क्या है। इसी तरह उद्योगों की धूल में बीबीएन को ढांप दिया, लेकिन हिमाचली युवा की क्षमता में धंधे शुरू नहीं कर पाए। स्वरोजगार या उद्यमशीलता के न पाठ्यक्रम और न ही प्रतिस्पर्धा पैदा हुई। नवाचार की काबिलीयत में हमारी उच्च शिक्षा या तकनीकी ज्ञान पहुंचा ही नहीं। ताज्जुब यह कि हमारे उच्चशिक्षित बच्चे चंडीगढ़, गुडग़ांव, मोहाली, नोएडा, दिल्ली, पुणे, हैदराबाद, मुंबई व बेंगलूर जैसे शहरों के आईटी क्षेत्र में सम्मानित स्थान और पगार पा रहे हैं, लेकिन हिमाचल की सियासत ने आज तक कोई आईटी पार्क स्थापित नहीं होने दिया। वैसे वर्तमान सरकार में कैबिनेट रैंक प्राप्त आईटी सलाहकार हैं, लेकिन उनके ही जिला का चैतड़ आईटी पार्क उपेक्षा की सूलियों पर टंगा है। हमारे भीतर राजनीतिक इच्छा शक्ति होती तो प्रदेश में कम से कम आधा दर्जन आईटी पार्क अब तक सॉफ्टवेयर ज्ञान को आसरा दे चुके होते। हमारे नेता कब से पारंपरिक मेलों को सियासी मेलों में परिवर्तित कर चुके हैं, लेकिन लोक कलाकार बेरोजगार बनकर खड़ा है।

अगर कायदे से मेलों, सांस्कृतिक समारोहों, पारंपरिक व धार्मिक त्योहारों का सही प्रबंधन करें, तो इससे पैदा होती आर्थिकी से लोक कलाओं और लोक कलाकार को प्रश्रय मिलता। हमारे विकास का राज्य स्तरीय नक्शा नहीं और न ही युवा क्षमता को रास्ता मिलता है। ऐसे में जो सफल हुए, उन्होंने देश-विदेश के ज्ञान से ही बहुत कुछ पाया, लेकिन सियासत निजी क्षेत्र को अपनाने से कतराती है। यह दीगर है कि बीबीएन के आसरे भी एक सियासत पनपती है और खड्डों की रेत को छानकर राजनीति की आलंबरदारी परवान चढ़ती है। काश! मतदाता नेताओं को उनके नजरिए पर तौलते। नजरिया किसी विधानसभा क्षेत्र में खुलने वाला बस डिपो, कालेज और कोई कार्यालय नहीं, बल्कि रोजगार की अधोसंरचना में किया गया प्रयास है। कभी हिमाचल का सेब आधारित उद्योग पूरे देश को जूस पिलाने लगा था, लेकिन अब सब उजड़ गया। ब्रांड हिमाचल के नाम पर आज भी भुट्टिको के मार्फत हमें एक हिमाचली टोपी, शाल व स्कार्फ मिल रहा है या स्वयं सहायता समूहों ने सिड्डू की खुशबू विदेशों तक फैला दी, वरना राजनीतिक लफ्फाजी ने हर संभावना को ताक पर रख दिया। ऐसे में सिने टूरिज्म को अगर राज्य अपना लेता तो प्रदेश की ब्रांडिंग में आर्थिक तरक्की के साथ लोक कलाकारों का भी प्रोफेशन आगे बढ़ जाता। पूर्व मुख्यमंत्री शांता कुमार ने फिल्म सिटी की वकालत करते हुए जो संभावनाएं देखी हैं, उनको वर्षों से महसूस करके भी यह राज्य अपने ढर्रे में मशगूल है। ऐसा नहीं कि नीति नियंता फिल्म पॉलिसी तक नहीं पहुंचे, लेकिन इसकी फर्ज अदायगी खेल नीति की तरह हो गई। आश्चर्य यह कि जिस दिन कोई शुभ मुहूर्त निकलेगा, फिल्म सिटी को भी सियासी वकालत से कोई ढोएगा, वरना प्रदेश में गरली-परागपुर खुद में एक फिल्म सिटी की खूबियां लिए पहले से ही अपना दावा पुख्ता कर चुके हैं। प्रदेश के दोनों धरोहर गांव अगर फिल्म सिटी के प्रारूप में विकसित किए जाएं, तो यहां पड़ोसी राज्यों से भी मांग बढ़ेगी। यह इसलिए भी कि गरली-परागपुर के करीब पौंग जलाशय, हरिपुर-गुलेर-मसरूर, सुजानपुर एवं कांगड़ा किले की धरोहर, डलहौजी-चंबा, खजियार, मकलोडगंज, पालमपुर तथा मंडी-कुल्लू की दृश्यावलियां, चाय व फल बागान तथा सांस्कृतिक विरासत को ओढ़े कई चौगान व धार्मिक स्थल उपलब्ध हैं।

न्याय को भटकती आवाज

इस देश में एक साथ दो दुनिया बसती नजर आती हैं। एक वह दुनिया जिसमें सात बीस का सौ होता है, और दूसरी वह दुनिया जिससे आठ बीस का पचास भी नहीं होता। गलत नतीजा बता क्या हम ऐसी दुनिया की बात कर रह हैं, जिससे गणित पढना गुनाह है, या किसी उस दुनिया की बात जिसमें इतिहास के नाम पर भूगोल पढ़ा दिया जाता है। उसके बाद किसी फर्जी विश्वविद्यालय की उच्च डिग्री का दुमछल्ला लगा लो। भाषण करने लगो तो अपनी वक्तृता में दस बार अपने नाम का प्रयोग करने के बाद कहो, कि 'मैं तो बेचारा एक कार्यकर्ता हूं, आपकी जिंदगी सफल करने के लिए इस धरती पर आया हूं।' जी हां, जो ऊंचे प्रासादों से अवतरित होते हैं, उनके लिए कानूनों की आचार संहिता कुछ और, और इधर बेचारे फुटपाथियों के लिए कानून की सख्ती का कोई अंत नहीं। इस देश में हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग कानून नहीं हो सकता। साब, हम आह भी भरें तो हो जाते हैं बदनाम, वह कत्ल भी करें तो शिकवा नहीं होता। लगता है ये कानून सदा से दो रुख वाले ही चलते आए हैं। क्या जिंदाबाद का नारा लगाने के बाद दो अलग वर्गों के लिए एक ही कानून हो जाएगा? यह कानून बड़े-छोटे का, ऊंचे-नीचे का फर्क नहीं करेगा। सबकी धान पसेटी एक ही भाव बिकेगी। लेकिन ऐसा कभी होना नहीं। ऐसी समता की मात्र उम्मीद की जा सकती है, ऐसी उम्मीद जो करने वाले भी अपने ऊंचे मंच पर खड़े होकर जनता जनार्दन को समझा सकें।

लेकिन मंच से बोलता हुआ आदमी ऊंचे स्वर में बोलता रहता है, और धरती पर छिटके हुए लोग गिड़गिड़ाते तक एक अंदाज से हैं। मंच से उतरे आदमी के पांव पखारते हैं, वह भी एक अंदाज से। उन्होंने कहा कि बड़े और छोटे का फर्क तो सदा से रहा है। भुखमरी सूचकांक को देख विज्ञ पुरुषों ने बताया, 'देखो-देखो अपने यहां भुखमरी से इतने नहीं मरे, जितनी उम्मीद थी।' आंकड़ों का खेल है, इसकी कलई मरोड़ दो, तो लगता है जब इतने लोग मरे ही नहीं, तो कैसे कह सकते हो देश बदहाल है, असमाजवादी है? अब इन टिप्पणियों का क्या करें? टिप्पणी करने वाले टिप्पणी करते रहते हैं, और फुटपाथ पर बरसों से पड़े आदमी जिंदाबाद का जयघोष करते हुए देश की तरक्की के जामिन हो जाते हैं।

अब ऐसी भी क्या विसंगति कि मरीजों की परिचर्चा करने वाले, उन्हें मौत के मुंह से बाहर निकाल लेने वाले सम्पदा व्यवसायी कहलाएं? भला ये लोग कमाई नहीं करेंगे तो ये अस्पताल दो मंजिलों से चार मंजिल कैसे बनेंगे? मंजिलें उठेंगी, तो रोगियों के लिए नए कमरे बनेंगे। जानते हो, देश में अत्यधिक जनसंख्या की समस्या है। अस्पतालों के भवन तरक्की नहीं करेंगे, तो लोगों की जान कैसे बचेगी? मानवता के इन पुजारियों को सम्पदा व्यवसायी न कहो। इन्होंने मेहनत का अधिक मूल्य ले लिया, प्राण बचाऊ औषधियों को काला बाजार में बेच दिया, तो उनकी मानवता की पूजा में कोई अंतर कैसे आ गया? देख लो यहां भी दो दुनिया हो गई। एक दुनिया में मानवता की पूजा के ताज बंटते हैं, और दूसरी में काले बाजार के शहजादे दनदनाते हैं। महामारी जब टल जाती है तो दोनों दुनिया एक जैसी नहीं हो जातीं क्या? रोग से बच निकलने के आंकड़े तो सबको एक जैसी खुशी दे जाते हैं। आओ, यह गरीब, अमीर का फर्क करना बंद कर दें। सदियों से गरीब, गरीब न रहे होते, तो शब्दकोष में सेवाभाव को इतना ऊंचा दर्जा कैसे मिलता? आज की दुनिया में तो जो जितने ऊंचे स्वर में चिल्लाता है, वही नैतिकता का बहुत बड़ा अलंबरदार बन जाता है। कुर्सियों पर जो बैठे हैं, वही तो पीढ़ी दर पीढ़ी नैतिकता, बलिदान और सच्चाई के पहरुए कहलाते हैं, अभिनंदित होते हैं, महिमामंडित होते हैं।

सुरेश सेठ

विचार

संस्कृतिविहीन और पथभ्रष्ट होता हिमाचली युवा

हिमाचल सरकार को भी चाहिए कि वह बैरकों और बटालियनों में तैनात पुलिस कर्मियों से कुछ जवानों को हिमाचल प्रदेश के सभी थानों में अटैच कर और उन्हें भीड़भाड़ वाले स्थानों में हथियारों सहित तैनात करे, ताकि स्थानीय नागरिकों एवं पर्यटकों में सुरक्षा का भरोसा जगाया जा सके। आप आम पब्लिक को रामभरोसे नहीं छोड़ सकते हैं, इसके लिए पुलिस थानों को संसाधनों से परिपूर्ण बनाना ही होगा'

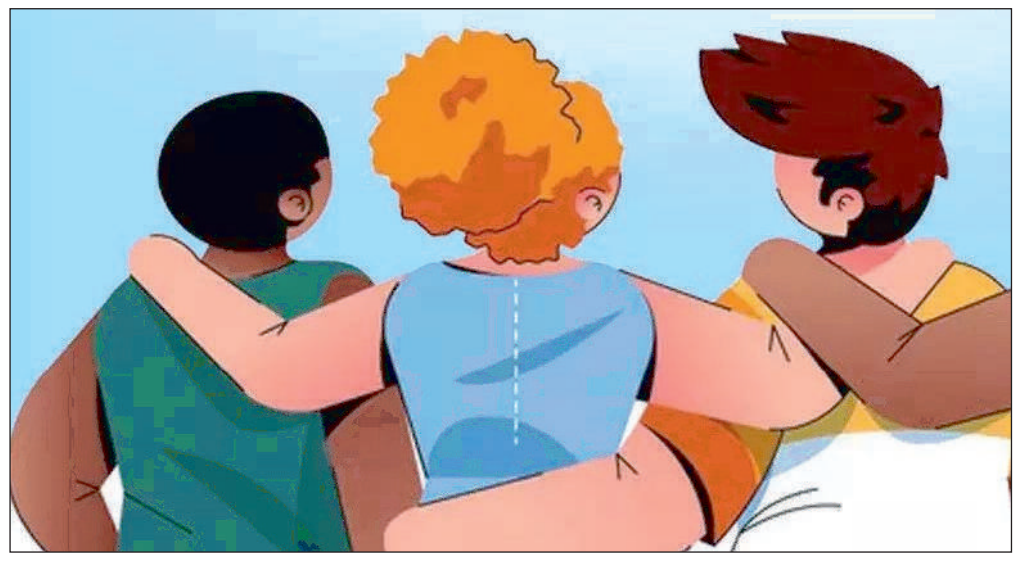

हिमाचल प्रदेश ने विकास पथ पर 1948 से लेकर आज तक एक लंबा सफर तय किया है और उसका लाभ अनेकों क्षेत्रों के साथ-साथ शिक्षा साक्षरता के क्षेत्र में भी दर्ज हुआ है। आज हमारे हजारों युवक युवतियां जहां शिक्षा से प्राप्त ताकत के बलबूते भारत और विदेशों में अपनी प्रतिभा का डंका बजवा रहे हैं, तो वहीं कुछ युवाओं का रुझान शिक्षा में कम और आवारागर्दी में ज्यादा व्यतीत हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों से हिमाचलियों की जीवनशैली और मानसिकता में काफी बदलाव आ चुके हैं। अब हिमाचली पहले वाले शांत, धीर गंभीर और धैर्यवान नहीं रहे हैं। भौतिकतावाद, अमीरी-गरीबी की बढ़ती खाई, नशे के बढ़ते प्रचलन और दिखावटी संस्कृति का प्रभाव हमारी युवा पीढ़ी पर भी पड़ा है। कई बिगड़ैल युवा अच्छी तरह से पढ़-लिखकर कुछ बनने की बजाय गलत संगत के चलते पहले पढ़ाई लिखाई से विमुख होकर फिर नशे के आदी बनकर और आवारागर्दी करते हुए अपनी युवावस्था के चुनिंदा बेहतरीन वर्षों को बर्बाद कर मानसिक अवसादग्रस्त होकर परिवारों और समाज के लिए एक नासूर बन चुके हैं। हिमाचल में अब रोजाना नशीले पदार्थों और मार-काट की खबरें आम हो गई हैं। ताजा घटनाक्रम में एक सिरफिरे युवक द्वारा पालमपुर के स्थानीय कन्या महाविद्यालय की छात्रा पर दराट से किया गया जानलेवा हमला सुर्खियों में है। घटना इतनी वीभत्स थी कि लडक़ा सीसीटीवी फुटेज में युवती पर लगभग एक दर्जन वार करता दिख रहा है। शुक्र है कि युवती की जान बच गई। इससे पहले शिमला के माल रोड इलाके में एक युवक की तेज धारदार हथियार से हत्या किए जाने का मामला सामने आया था। मृतक के परिजनों ने पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाया है।

वहीं पालमपुर बस अड्डे के पास घटी घटना से लोगों में पुलिस के प्रति भारी रोष है। एक नागरिक सोशल मीडिया में लताड़ लगाते हुए लिखते हैं कि थोड़ी सी शर्म कर लो, पालमपुर पुलिस चालान काटने को हर मोड़ पर तैनात रहते है, लेकिन आम पब्लिक को सुरक्षा कौन मुहैया करवाएगा? घटना को लेकर अब युवतियों के अभिभावक भी चिंता में हैं। यह नितांत सत्य है कि आप हिमाचल के किसी भी महत्वपूर्ण स्थल या शहर में चले जाईये आपको पुलिस नाम की कोई व्यवस्था देखने को नहीं मिलेगी। सिर्फ बाजारों में ट्रैफिक व्यवस्था के लिए चंद कर्मी दिख जाएंगे, लेकिन हथियारबंद पुलिस सुरक्षाकर्मी कहीं नहीं दिखेंगे जिससे आम लोगों में सुरक्षा का भरोसा जगे। थानों में पुलिस कर्मचारियों का नितांत अभाव है और अफसरशाही की कार्यप्रणाली सवालों के घेरे में है कि वह क्या देख रही है? कार्रवाई करने और तफ्तीश करने वाले पुलिस कर्मियों पर काम का दबाव बढ़ गया है और पुलिस गश्त न के बराबर ही है। यह चिंता का विषय है कि कहीं कहीं लडक़ों के साथ लड़कियां भी नशे में धुत देखने को मिल रही हैं। कई लड़कियां घरों से निकलकर लडक़ों से दोस्ती के नाम पर सुनसान इलाकों में विचरण करती दिख जाएंगी।

लड़कियों से भी मर्यादित आचरण की अपेक्षा है। आज छोटी मोटी बात पर आपा खोकर लोगों द्वारा अपराध की घटनाओं को अंजाम देने के मामलों में दोषपूर्ण परवरिश, सामाजिक माहौल को दोषी करार दें या गलत संगत को, यह समस्या मनोवैज्ञानिकों के विवेचन व विश्लेषण का विषय है। पुलिस के लिए भी इस प्रकार के मसले और अपराधियों की विकृत मानसिकता चिंता का कारण बनी हुई है।

बच्चों और युवा मन तथा दिमाग पर अपराध से जुड़ी फिल्मों, वेब सीरीज और फेसबुक में परोसी जा रही गंदी रील्स का बुरा असर पड़ रहा है जो उन्हें आपराधिक कार्यों के लिए प्रेरित करती हैं। यह सच है कि पिछले कुछ वर्षों में आईटी क्रांति के चलते लोगों के सामाजिक संपर्कों और मेलमिलाप में कमी आई है और रिश्तों में दूरियां बढ़ी हैं और स्नेह, अपनत्व और आपसी सद्भाव घट गया है। वर्तमान समय में युवा अपने दिन का अधिकांश समय इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग प्लेटफार्मों पर बिताता है और साइबर अपराध, साइबर बुलिंग और हिंसक वीडियो गेम सहित गंदी वीडियो देखने के लिए अभिशप्त है। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि बच्चे देश के भावी नागरिक होते हैं। लिहाजा उनके पालन पोषण, शिक्षा और विकास के मद्देनजर घर परिवार, स्कूल एवं समाज में बेहतरीन शैक्षिक और सुसंस्कृत वातावरण तैयार करना माता-पिता तथा समाज का दायित्व बनता है। यदि हम बच्चों को नैतिकता से परिपूर्ण आदर्श नागरिक बनाने में चूक गए तो समझो वे आगे चलकर उद्दंड एवं आपराधिक गतिविधियों के सरगना ही बनेंगे। यद्यपि हिमाचल में वर्ष 2002 में तैयार राज्य युवा नीति के अनुसार युवा वर्ग के लिए बाल्यवस्था से युवाकाल तक के सफर को निर्विघ्न एवं क्षमतादायी बनाने के लिए उत्तरोत्तर सरकारों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, दक्षता विकास व मनोरंजक खेल सुविधाओं में सुधार का प्रयास किया है, लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पालमपुर जैसी घटनाएं तथा कुछ अन्य घटनाएं युवाओं में बढ़ती हताशा, कुंठा और आर्थिकहीनता की ओर इशारा करती हैं।

इन समस्याओं का समाधान होना अनिवार्य है। युवाओं को भी समझना होगा कि जीवन यात्रा को सरल, सुगम एवं खुशनुमा बनाने के लिए स्कूली और युवावस्था के समय का सुंदर उपयोग सुनिश्चित बनाकर भविष्योन्मुखी लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना होगा, ताकि बाद के वर्षों में सुखपूर्वक जीवनयापन संभव हो सके। हिमाचल सरकार को भी चाहिए कि वह बैरकों और बटालियनों में तैनात पुलिस कर्मियों से कुछ जवानों को हिमाचल प्रदेश के सभी थानों में अटैच कर और उन्हें भीड़भाड़ वाले स्थानों में हथियारों सहित तैनात करे, ताकि स्थानीय नागरिकों एवं पर्यटकों में सुरक्षा का भरोसा जगाया जा सके। आप आम पब्लिक को रामभरोसे नहीं छोड़ सकते हैं, इसके लिए पुलिस थानों को संसाधनों और मैनपावर से परिपूर्ण बनाना ही होगा।

अनुज आचार्य

इंडिगो एयरलाइन की एक और छलांग, 30 एयरबस ए 350-900 विमानों का दिया ऑर्डर

परिवहन विशेष न्यूज

कंपनी ने एक बयान में कहा कि 30 ए350-900 विमानों का आर्डर देकर वह चौड़े आकार वाले विमानों का परिचालन करने वाली कंपनियों में शामिल हो जाएगी। इन विमानों में रॉल्स रॉयस के ट्रेंट एक्सडब्ल्यूबी इंजन होता है। इंडिगो में फिलहाल 350 विमानों का परिचालन होता है। कंपनी ने इस्तांबुल मार्ग पर परिचालन के लिए तुर्किश एयरलाइंस से दो बोइंग 777 विमान पट्टे पर लिए हैं।

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी विमानन कंपनी इंडिगो ने चौड़े आकार के 30 ए350-900 विमानों का ऑर्डर दिया है। अपने अंतरराष्ट्रीय परिचालन का विस्तार कर रही एयरलाइन ने गुरुवार को यह घोषणा की। कंपनी अभी तक सिर्फ पतले आकार के एयरबस विमानों का परिचालन कर रही है। हालांकि, कंपनी ने इस्तांबुल मार्ग पर परिचालन के लिए तुर्किश एयरलाइंस से दो बोइंग 777 विमान पट्टे पर लिए हैं।

कंपनी ने एक बयान में कहा कि 30 ए350-900 विमानों का आर्डर देकर वह चौड़े आकार वाले विमानों का परिचालन करने वाली कंपनियों में शामिल हो जाएगी। इन विमानों में रॉल्स रॉयस के ट्रेंट एक्सडब्ल्यूबी इंजन होता है। इंडिगो में फिलहाल 350 विमानों का परिचालन होता है। कंपनी ने पिछले साल जून में एयरबस को 500 विमानों का ऑर्डर दिया था। यह किसी एयरलाइन द्वारा एक बार में दिया गया सबसे बड़ा ऑर्डर था।

इस ऑर्डर के साथ एयरबस के साथ इंडिगो की रणनीतिक साझेदारी नई ऊंचाइयों पर पहुंच गई है। इसी तरह, रॉल्स रॉयस के साथ सहयोग एक आशाजनक दीर्घकालिक सहयोग की शुरुआत का प्रतीक है। इन नए विमानों की डिलीवरी 2027 से शुरू होने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, इंडिगो के पास अतिरिक्त 70 एयरबस ए350 फैमिली विमानों के खरीद अधिकार हैं, जो भविष्य में विस्तार के लिए फ्लेक्सीबिलिटी प्रदान करते हैं।

बता दें कि यह घोषणा साल 2023 में इंडिगो के उल्लेखनीय प्रदर्शन के बाद आई है। पिछले वर्ष इंडिगो के विमानों में 10 करोड़ लोगों ने सफर किया। वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ती एयरलाइनों में से एक के रूप में, यह ऑर्डर इंडिगो के विकास और विस्तार को बढ़ावा देगा।

इंडिगो के सीईओ पीटर एल्बर्स ने इस क्षण पर अपना उत्साह व्यक्त किया और एयरलाइन और भारतीय विमानन दोनों के लिए इसके महत्व पर जोर दिया। उन्होंने भारत की पसंदीदा एयरलाइन होने और देश के विकास में योगदान देने के लिए इंडिगो की प्रतिबद्धता दोहराई।

वाइड-बॉडी विमानों में इंडिगो का निवेश 2030 तक देश को वैश्विक विमानन केंद्र के रूप में स्थापित करने के भारत सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

सरकार को उम्मीद, बेहतर मानसून से खाद्य वस्तुओं की महंगाई होगी कम

वित्त मंत्रालय की तरफ से गुरुवार को जारी जारी मासिक रिपोर्ट जारी हुई। रिपोर्ट के मुताबिक मानसून सीजन में सामान्य से अधिक बारिश होने से फसल का उत्पादन अधिक होने का अनुमान है। इससे आने वाले महीनों में खाद्य वस्तुओं की कीमतों में नरमी आएगी। रिपोर्ट के अनुसार खाद्य वस्तुओं की महंगाई सरकार की प्रमुख चुनौती है।

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय का मानना है कि मौसम विभाग के अनुमान के मुताबिक इस साल सामान्य से अधिक मानसून रहेगा और फलस्वरूप आने वाले महीनों में खाद्य वस्तुओं की कीमतों में नरमी आएगी।

अभी खुदरा महंगाई दर भले ही पांच प्रतिशत से नीचे आ गई है, लेकिन खाद्य वस्तुओं की खुदरा महंगाई दर आठ प्रतिशत से अधिक है। इस साल मार्च में खुदरा महंगाई दर 4.85 प्रतिशत थी जबकि खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर 8.5 प्रतिशत थी। इस साल फरवरी में खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर 8.7 प्रतिशत थी।

वित्त मंत्रालय की तरफ से गुरुवार को जारी जारी मासिक रिपोर्ट के मुताबिक मानसून सीजन में सामान्य से अधिक बारिश होने से फसल का उत्पादन अधिक होने का अनुमान है। रिपोर्ट के मुताबिक खाद्य वस्तुओं की महंगाई सरकार की प्रमुख चुनौती है।

सरकार उठा रही है अहम कदम

सरकार आयात को खोलने, स्टाक सीमित करने एवं सरकारी कीमत पर कई वस्तुओं की बिक्री जैसे प्रयासों से खाद्य वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है। मुख्य रूप से दाल व सब्जी के दाम में बढ़ोतरी से खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर आठ प्रतिशत से ऊपर पहुंच गई है। अभी दाल की कीमत काफी तेज है, इसलिए इस बार खरीफ सीजन में दाल की बुवाई अधिक होने की उम्मीद की जा रही है।

रिपोर्ट के मुताबिक अभी दुनिया भर में खाद्य वस्तुओं की बढ़ती कीमतें चुनौती बनी हुई है। जर्मनी, इटली, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका व ब्रिटेन जैसे देश खाद्य वस्तुओं की महंगाई से प्रभावित है और वैश्विक स्तर पर खाद्य वस्तुओं के दाम को नियंत्रण में लाने का प्रयास किया जा रहा है।

वित्त मंत्रालय का यह भी मानना है कि विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के सूचकांक को देखते हुए घरेलू स्तर पर मैन्यूफैक्चरिंग और सेवा दोनों ही सेक्टर में विस्तार जारी रहेगा। हालांकि भू-राजनीतिक तनाव चिंता का विषय है, लेकिन धीरे-धीरे इस तनाव में कमी की संभावना है जिससे विकास में और बढ़ोतरी हो सकती है।

विभिन्न वैश्विक एजेंसियां और आरबीआई पहले ही कह चुकी है कि इस साल भी भारत सबसे तेज गति से विकास करने वाला देश होगा।

वित्त मंत्रालय का मानना है कि मैन्यूफैक्चरिंग प्रोत्साहन से जुड़ी प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) स्कीम का परिणाम अब दिखने लगा है और भारतीय निर्यात में भी चालू वित्त वर्ष में बढ़ोतरी का रुख रहने का अनुमान है। इस वजह से चालू वित्त वर्ष में व्यापार घाटे में भी कमी आएगी।

निर्यात होने वाले सभी मसाले की गुणवत्ता की होगी जांच, मसाला बोर्ड ने जारी किया निर्देश

सिंगापुर और हांगकांग में एवरेस्ट एवं एमडीएच के मसालों में एथिलीन आक्साइड के तत्व पाए गए। इसके बाद दोनों देशों ने इन ब्रांडों के मसालों के आयात को बंद कर दिया है। एथिलीन आक्साइड से कैंसर जैसी बीमारी होने का खतरा होता है। अब अन्य देशों में निर्यात होने वाले मसालों की गुणवत्ता की जांच की जाएगी। मसाला बोर्ड ने इस संबंध में निर्देश जारी किया है।

नई दिल्ली। सिंगापुर और हांगकांग निर्यात होने वाले मसालों में एथिलीन आक्साइड के तत्व पाए जाने के बाद अब अन्य देशों में निर्यात होने वाले मसालों की गुणवत्ता की जांच की जाएगी। मसाला बोर्ड ने इस संबंध में निर्देश जारी किया है।

सिंगापुर और हांगकांग में एवरेस्ट एवं एमडीएच के मसालों में एथिलीन आक्साइड के तत्व पाए गए और उसके बाद दोनों देशों ने इन ब्रांडों के मसालों के आयात को बंद कर दिया है। एथिलीन आक्साइड से कैंसर जैसी बीमारी होने का खतरा होता है।

बोर्ड की तरफ से दी गई जानकारी के मुताबिक मसालों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं और बोर्ड उन निर्यातकों से भी संपर्क कर रहा है जिनके मसाले को सिंगापुर व हांगकांग ने प्रतिबंधित किया है।

मसाला बोर्ड की प्रयोगशालाओं में मसालों की गुणवत्ता जांच के बाद ही निर्यात की इजाजत होगी। गुणवत्ता नियम का पालन नहीं करने वाले निर्यातकों के मसाला निर्यात पर प्रतिबंध लगाया जाएगा।

इस वित्तीय वर्ष निजी हवाई हड्डों की होगी चांदी, CRISIL ने लगाय रेवेन्यू में 30 प्रतिशत ग्रोथ का अनुमान

निजी हवाईअड्डों की कमाई में इस वित्तीय वर्ष में 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी होने की संभावना है। वैमानिकी स्रोतों में बुनियादी ढांचे के उपयोग के लिए यात्रियों एयरलाइंस और कार्गो ऑपरेटरों से एकत्र की गई फीस शामिल है। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी क्रिसिल ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि गैर-वैमानिकी स्रोतों में विज्ञापन रिटेल सेल लाउंज और शुल्क-मुक्त दुकानें शामिल हैं।

नई दिल्ली। गुरुवार को एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बढ़ते ट्रैफिक के कारण देश में निजी हवाईअड्डों की कमाई में इस वित्तीय वर्ष में 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी होने की संभावना है। जैसे-जैसे यात्रियों की संख्या बढ़ेगी, हवाईअड्डों के वैमानिकी और गैर-वैमानिकी राजस्व में वृद्धि देखी जाएगी।

सालाना 45 प्रतिशत बढ़ोतरी की उम्मीद

वैमानिकी स्रोतों में बुनियादी ढांचे के उपयोग के लिए यात्रियों, एयरलाइंस और कार्गो ऑपरेटरों से एकत्र की गई फीस शामिल है। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी क्रिसिल ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि गैर-वैमानिकी स्रोतों में विज्ञापन, खुदरा, लाउंज और शुल्क-मुक्त दुकानें शामिल हैं। इसमें कहा गया है कि हवाईअड्डों के राजस्व में लगभग दो-तिहाई बढ़ोतरी वैमानिकी स्रोतों से आने की उम्मीद है, जो साल-दर-साल 45 प्रतिशत की वृद्धि है।

घरेलू यातायात में होगी वृद्धि

क्रिसिल ने कहा कि निरंतर आर्थिक विकास, अधिक हवाई अड्डों के खुलने और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी में सुधार से घरेलू यातायात वृद्धि के लिए आवश्यक अनुकूल परिस्थितियां मिल रही हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, बढ़ती व्यावसायिक यात्रा और मलेशिया और वियतनाम जैसे देशों के लिए वीजा आवश्यकताओं को आसान बनाना, पश्चिमी यूरोप के लिए वीजा आवेदनों के लिए प्रतीक्षा समय को कम करना और पश्चिमी और दक्षिण पूर्व एशिया के लिए कनेक्टिविटी में सुधार महत्वपूर्ण सकारात्मक बातें हैं।

यात्री संख्या में मौजूदा उछाल की प्रत्याशा में हवाई अड्डों ने महामारी के दौरान अपनी क्षमता को दोगुना से अधिक करने के लिए महत्वपूर्ण विस्तार किया। रिपोर्ट के अनुसार, वैमानिकी शुल्कों में मौजूदा वृद्धि इन क्षमता विस्तारों की भरपाई कर रही है। इसमें कहा गया है कि शेष एक-तिहाई राजस्व वृद्धि गैर-वैमानिकी स्रोतों से संचालित होगी, जो साल-दर-साल 15 प्रतिशत की वृद्धि है।

भारत की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेंगे ये कारक, रिपोर्ट में सामने आई ये बात

भारत के आशाजनक आर्थिक विकास में समर्थन देने में लचीली वृद्धि मूल्य स्थिरता और स्थिर बाहरी क्षेत्र का दृष्टिकोण सहायक होगा। अंतरराष्ट्रीय संगठनों और आरबीआई द्वारा भारत के लिए चालू वित्त वर्ष के विकास दृष्टिकोण के सकारात्मक आकलन के साथ भारत सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बनी हुई है। आइये हम इस विषय के बारे में विस्तार से जानते हैं।

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय की एक रिपोर्ट में गुरुवार को कहा गया कि लचीली वृद्धि, मूल्य स्थिरता और स्थिर बाहरी क्षेत्र का दृष्टिकोण अनिश्चित वैश्विक परिस्थितियों के बीच भारत के आशाजनक आर्थिक प्रदर्शन को समर्थन दे रहा है। मार्च की मासिक आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि कुल मिलाकर, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और आरबीआई द्वारा भारत के लिए चालू वित्त वर्ष के विकास दृष्टिकोण के सकारात्मक आकलन के साथ, भारत सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बनी हुई है।

आईएमएफ ने अपने अप्रैल 2024 विश्व आर्थिक आउटलुक में वित्त वर्ष 2024 के लिए भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि के अपने अनुमान को जनवरी 2024 के अपडेट में 6.7 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.8 प्रतिशत और अक्टूबर 2023 डब्ल्यूईओ में 6.3 प्रतिशत कर दिया है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक आर्थिक विकास परिदृश्य में धीरे-धीरे पुनरुत्थान देखा जा रहा है, जो मंदी की आशंकाओं को कम कर रहा है और प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में विकास में तेजी ला रहा है। इसमें कहा गया है कि भू-राजनीतिक तनाव चिंता का विषय बना हुआ है, लेकिन हाल के घटनाक्रमों के बावजूद, जोखिम धारणाएं नरम हो गई हैं, जिससे विकास में तेजी की संभावना दिख रही है।

प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में प्रगति

वैश्विक आर्थिक वृद्धि में सुधार के बारे में बात करते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में यह प्रगति पर है, हालांकि असमानताएं बनी हुई हैं। जबकि प्रमुख संकेतक संकेत देते हैं कि आर्थिक गतिविधि में वृद्धि हुई है और भू-राजनीतिक तनाव थोड़ा कम हुआ है, हाल के संघर्ष जोखिम पैदा कर रहे हैं। इसके बावजूद

वैश्विक चुनौतियों में, भारत अपने मजबूत आर्थिक प्रदर्शन के साथ खड़ा है, सभी क्षेत्रों में व्यापक-आधारित विकास को उजागर करता है और वैश्विक विकास प्रक्षेपवक्र का समर्थन करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का दावा करता है।

वैश्विक मंदी के कारण भारत के व्यापारिक निर्यात और आयात में नरमी आई है, इसमें कहा गया है कि व्यापार में मंदी के परिणामस्वरूप वित्त वर्ष 2023-24 में व्यापारिक व्यापार घाटा कम हो गया है, क्योंकि निर्यात में आयात की तुलना में कम संकुचन देखा गया है।

हालांकि, गैर-पेट्रोलियम और गैर-रत्न और आभूषण व्यापारिक निर्यात ने पिछले कुछ महीनों में निरंतर वृद्धि के साथ लचीलापन दिखाया है, जो वित्त वर्ष 24 में 3 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है।

2023-24 में पूंजी प्रवाह में बदलाव

बढ़ते सॉफ्टवेयर निर्यात और व्यावसायिक सेवाओं के निर्यात द्वारा समर्थित, वित्त वर्ष 2014 में सेवा निर्यात सबसे तेज गति से बढ़ा।

इसमें कहा गया है कि इन विकासों के कारण, भारत के चालू खाते के घाटे में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 2023-24 के पहले नौ महीनों में सुधार हुआ है।

भारत के पूंजी प्रवाह में 2023-24 में एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया, और इसका विदेशी मुद्रा भंडार मार्च 2024 में सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया, जो 11 महीने के अनुमानित आयात और कुल विदेशी ऋण के 100 प्रतिशत से अधिक को कवर करने के लिए पर्याप्त था।

लगातार बढ़ रहे सोने के दाम पर लगा ब्रेक, आज इतने रुपये लुढ़क गया गोल्ड

Gold-Silver Price Today पिछले कुछ दिनों से सोने की कीमतों में तेजी देखने को मिली थी। आज वहीं सोने की कीमतों में हल्की गिरावट देखने को मिली है। वैश्विक स्तर पर सोने की दरों में गिरावट की वजह से राष्ट्रीय राजधानी में गुरुवार को सोने की कीमत 110 रुपये फिसलकर 72500 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। वहीं चांदी की कीमतों में तेजी आई है।

नई दिल्ली। सोने की कीमतों में तेजी आ रही थी। गोल्ड प्राइस को लेकर कई एक्सपर्ट कह रहे हैं कि इस साल के अंत में 10 ग्राम गोल्ड की कीमत 1 लाख रुपये तक पहुंच सकती है।

आज एमसीएक्स पर सोने की कीमतों में नरमी देखने को मिली है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार वैश्विक स्तर पर सोने की दरों में गिरावट के बीच राष्ट्रीय राजधानी में गुरुवार को सोने की कीमत 110 रुपये फिसलकर 72,500 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई।

पिछले सत्र में गोल्ड 72,610 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी। हालांकि, चांदी की कीमतें 350 रुपये उछलकर 84,100 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गईं। पिछले बंद में यह 83,750 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुआ था।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटी के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा दिल्ली के बाजारों में सोने की हाजिर कीमतें (24 कैरेट) 72,500 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रही हैं, जो पिछले बंद के मुकाबले 110 रुपये कम है। गुरुवार को सोने में मामूली गिरावट देखी गई क्योंकि मध्य पूर्व में तनाव कम होने के कारण सुरक्षित-हेवन प्रीमियम में कमी के कारण कीमती धातु की समग्र अपील कम रही।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने-चांदी के दाम

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कॉमेक्स पर सोना हाजिर 2,319 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था, जो पिछले बंद से 3 अमेरिकी डॉलर कम है। हालांकि, चांदी मामूली बढ़त के साथ 27.20 डॉलर प्रति औंस पर थी। पिछले सत्र में यह 27.10 डॉलर प्रति औंस पर बंद हुआ था.

एबन्स होल्डिंग्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी चिंतन मेहता ने कहा कि व्यापारी अमेरिका से आने वाले मैक्रो डेटा से पहले पीली धातु पर कोई भी ताजा स्थिति लेने से परहेज करेंगे, जिसमें साप्ताहिक बेरोजगारी के दावे और गुरुवार को आने वाले अमेरिकी पहली तिमाही के जीडीपी अनुमान भी शामिल हैं।.

एलकेपी सिक्योरिटीज के वीपी रिसर्च एनालिस्ट - कमोडिटी एंड करेंसी, जतीन त्रिवेदी ने कहा कि बाजार की धारणा आशावादी बनी हुई है, जिसका फोकस शुक्रवार को जारी होने वाले आगामी अमेरिकी व्यक्तिगत उपभोग व्यय (पीसीई) मूल्य सूचकांक डेटा पर है।

वंदे भारत में सफर करने वाले ध्यान दें, रेलवे ने बदला नियम; ट्रेन में अब नहीं मिलेगी ये सुविधा

अगर आप एक शहर से दूसरे शहर आने जाने के लिए वंदे भारत ट्रेन (Vande Bharat Train) का इस्तेमाल करते हैं तो यह खबर आपके काम की है। दरअसल रेलवे अधिकारियों ने ट्रेन यात्रियों को मिलने वाली इस सुविधा को लेकर अब बदलाव करने का फैसला किया है। रेलवे ने पानी की बर्बादी रोकने के लिए यह कदम उठाया है।

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। वंदे भारत ट्रेन में यात्रा करने वाले यात्रियों को एक लीटर वाली पानी की बोतल मिलती है। रेलवे ने इसमें अब बदलाव करने का निर्णय लिया है। यात्रियों को एक लीटर की जगह 500 मिलीलीटर की पानी की बोतल प्रदान की जाएगी। अधिकारियों का कहना है कि पानी की बर्बादी को रोकने के लिए यह कदम उठाया गया है। अधिकारियों का कहना है कि ट्रेन में यात्रियों को दी जाने वाली पानी की बोतल की उपयोगिता की समीक्षा करने के बाद यह कदम उठाया गया है। यह देखा गया है कि अधिकांश यात्री पानी का पूरा उपयोग नहीं करते हैं।

पानी की बर्बादी रोकने को लिया फैसला

बोतल में बचा हुआ पानी किसी और के उपयोग लायक नहीं रह जाता है। इस बर्बादी को रोकने के लिए रेलवे द्वारा सभी वंदे भारत ट्रेनों में प्रत्येक यात्री को 500 मिलीलीटर की एक रेल नीर पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर (पीडीडब्ल्यू) बोतल देने का निर्णय लिया है।

500 मिलीलीटर की एक और रेल नीर पीडीडब्ल्यू बोतल यात्रियों की मांग पर बिना कोई अतिरिक्त शुल्क लिए दी जाएगी। इस तरह से यात्री अपनी जरूरत के अनुसार पानी ले सकेंगे। एक लीटर तक पानी लेने के लिए उन्हें कोई शुल्क नहीं देना पड़ेगा।

वोटिंग से एक दिन पहले ही ईस्ट त्रिपुरा में विशेष तरीकों से पड़े 11 हजार वोट, ये है वजह

ईस्ट त्रिपुरा संसदीय क्षेत्र में विशेष वोटिंग प्रक्रियाओं के तहत 11 हजार से अधिक मतदाताओं ने मतदान से एक दिन पहले ही अपने मताधिकार का प्रयोग कर लिया है। निर्वाचन अधिकारी ने स्पष्ट किया कि कुछ मतदान स्थलों पर सौ प्रतिशत से अधिक मतदान की खबर से भ्रम की स्थिति पैदा हुई जबकि ऐसा नहीं है। लोगों ने अपने घरों पर मताधिकार का प्रयोग किया।

अगरतला। ईस्ट त्रिपुरा संसदीय क्षेत्र में विशेष वोटिंग प्रक्रियाओं के तहत 11 हजार से अधिक मतदाताओं ने मतदान से एक दिन पहले ही अपने मताधिकार का प्रयोग कर लिया है। निर्वाचन अधिकारी ने स्पष्ट किया कि कुछ मतदान स्थलों पर सौ प्रतिशत से अधिक मतदान की खबर से भ्रम की स्थिति पैदा हुई जबकि ऐसा नहीं है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी पुनीत अग्रवाल ने गुरुवार को बताया कि कुछ मतदान स्थलों पर सौ प्रतिशत से अधिक मतदान इसलिए गिना गया क्योंकि वह ईडीसी वोटर भी थे। इलेक्शन ड्यूटी सर्टीफिकेट (ईडीसी) मतदान केंद्र में तैनात अधिकारियों को जारी किया जाता है।

अपने घरों पर मताधिकार का प्रयोग किया

उन्होंने बताया कि 17 और 18 अप्रैल को दिव्यांग और 85 साल से अधिक आयु के मतदाताओं ने अपने घरों पर मताधिकार का प्रयोग किया। इस प्रक्रिया में 4515 मतदाताओं ने मतदान किया। इसके अलावा, 165 उन लोगों ने वोट डाले जो आवश्यक सेवाओं में कार्यरत हैं। इसके अलावा, 6379 मतदाताओं ने बैलेट से मतदान किया।

अभी तक 94 प्रतिशत मत प्राप्त हुए

इस मामले में अभी तक 94 प्रतिशत मत ही प्राप्त हुए हैं। बाकी उन्हीं लोगों के बैलेट वोट माने जाएंगे जो निर्वाचन अफसरों को मतदान केंद्र पर चार जून को सुबह आठ बजे तक मिल जाएंगे।

ईस्ट त्रिपुरा में वैध मतदाताओं की संख्या 13,96,761

ईस्ट त्रिपुरा में कुल वैध मतदाताओं की संख्या 13,96,761 है। उल्लेखनीय है कि 26 अप्रैल को लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में 13.96 लाख वैध मतदाताओं को वोट डालने हैं। अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित इस संसदीय सीट पर चुनाव प्रचार बुधवार को ही खत्म हो गया था।

28 तारीख को राहुल गांधी कटक आएंगे

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड उडीशा

भुबनेश्वर : अगले रविवार 28 तारीख को राहुल गांधी कटक आ रहे हैं। सालेपुर और निश्चिंतकोइली में उनके कार्यक्रम हैं। राहुल गांधी की मौजूदगी में प्रदेश कांग्रेस 2024 के आम चुनाव के लिए अपना अभियान सालेपुर विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत उत्कल गोरम मधुसूदन दास की जन्मस्थली सातवमापुर से शुरू करेगी। श्री गांधी सातवामापुर में मधुबाबू की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के बाद निश्चिंतकोइली डंप साइट पर एक विशाल सार्वजनिक सभा को संबोधित करेंगे। समारोह में कटक, केंद्रपाड़ा और अन्य आसपास के जिलों से 1 लाख से अधिक कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल होंगे। अगले 28 तारीख को ओडोनिया स्वविमान और अस्मिता के प्रतीक मधुसूदन दास की जयंती है। इसलिए कांग्रेस मधुबाबू की जन्मस्थली से प्रचार अभियान शुरू करने जा रही है। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव पर राहुल गांधी मधु बाबू की जन्मस्थली पर ओडिशा कांग्रेस कार्यकर्ताओं और नेताओं को जीत का मंत्र देंगे। इससे पिछड़ रहे संगठन को बढ़ावा मिलेगा। राहुल के दौरे को लेकर कांग्रेस खेमे में तैयारियां तेज हो गई हैं।

अंतरिक्ष में परमाणु हथियारों की तैनाती पर रूस ने UN में साफ किया रुख, अमेरिका बोला 'सवाल तो उठता है'

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। दुनिया युद्ध के संकट को झेल रही है। एक तरफ जहां रूस और यूक्रेन के बीच जंग जारी है तो वहीं दूसरी तरफ इजराइल लगातार हमास को निशाने पर लिए हुए है। ईरान और इजराइल के बीच भी तनाव बढ़ा है। अब जहां तमाम देश इन युद्धों को लेकर चिंतित हैं तो वहीं दुनिया के सामने एक और बड़ा संकट खड़ा हो गया है। यह मुद्दा भी कोई छोटा मसला नहीं है। यह मुद्दा अंतरिक्ष में परमाणु हथियारों की तैनाती से संबंधित हैं। फिलहाल, रूस ने सभी देशों पर अंतरिक्ष में खतरनाक परमाणु हथियारों को तैनात करने की होड़ पर रोक लगाने संबंधी संयुक्त राष्ट्र और जापान के एक प्रस्ताव पर बुधवार को वीटो किया है। पंद्रह सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में 13 देशों ने प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया जबकि रूस ने इसका विरोध किया। चीन इस मामले पर नदारद रहा। रूस ने प्रस्ताव को राजनीति से प्रेरित करार देते हुए इसे खारिज कर दिया और कहा कि यह प्रस्ताव अंतरिक्ष में सभी प्रकार के हथियारों पर प्रतिबंध लगाने में उतना सक्षम नहीं है। प्रस्ताव में सभी देशों से अंतरिक्ष में परमाणु हथियार या फिर ऐसे किसी भी हथियार को तैनात नहीं करने का आह्वान किया गया है, जो भारी तबाही का कारण बने।अमेरिकी राजदूत लिंडा थॉमस ग्रीनफील्ड ने मतदान के बाद कहा कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का कहना है कि मॉस्को की अंतरिक्ष में परमाणु हथियारों को तैनात करने की मंशा बिल्कुल भी नहीं है लेकिन रूस की तरफ से वीटो किए जाने पर यह सवाल उठाता है कि सरकार कुछ ना कुछ छिपा रही है। अंतरिक्ष में हथियारों की तैनाती 1967 के अंतरराष्ट्रीय संधि के अंतर्गत प्रतिबंधित है। व्हाइट हाउस ने फरवरी में इस बात की पुष्टि की थी रूस ने उपग्रह रोधी हथियार क्षमता हासिल कर ली है हालांकि ऐसा कोई हथियार अभी तक प्रयोग में नहीं लाया गया है। 18 मार्च को थॉमस ग्रीनफील्ड ने प्रस्ताव की घोषणा की थी। पुतिन ने बाद में इस बात की घोषणा की थी कि मॉस्को का अंतरिक्ष में परमाणु हथियार तैनात करने का कोई इरादा नहीं है। उन्होंने दावा किया कि रूस ने केवल अमेरिका के समान अंतरिक्ष क्षमताएं विकसित की हैं।

'स्त्रीधन पर पति का हक नहीं', सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में 25 लाख रुपये लौटाने का दिया निर्देश

विवाहित जोड़े की संपत्ति से जुड़े एक मुकदमे में सुप्रीम कोर्ट ने अहम टिप्पणी की है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि एक पति का पत्नी के स्त्रीधन (महिला की संपत्ति) पर कोई नियंत्रण नहीं होता। अदालत ने कहा कि संकट के समय पति पत्नी के स्त्रीधन का इस्तेमाल कर सकता है लेकिन संपत्ति लौटाना उसका नैतिक दायित्व है।

नई दिल्ली। विवाहित जोड़े की संपत्ति से जुड़े एक मुकदमे में सुप्रीम कोर्ट ने अहम टिप्पणी की है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि एक पति का पत्नी के 'स्त्रीधन' (महिला की संपत्ति) पर कोई नियंत्रण नहीं होता। 10 साल से अधिक पुराने इस मुकदमे में अपने हक की लड़ाई के लिए सुप्रीम कोर्ट पहुंची महिला के मामले की सुनवाई जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की पीठ में हुई। कोर्ट ने पत्नी के 'स्त्रीधन' पर पति का नियंत्रण होने के मामले में अहम टिप्पणी की।

अदालत ने क्या कहा?

अदालत ने कहा कि संकट के समय पति पत्नी के स्त्रीधन का इस्तेमाल कर सकता है, लेकिन संपत्ति लौटाना उसका नैतिक दायित्व है। अदालत ने एक महिला के खोए हुए सोने के बदले 25 लाख रुपये लौटाने का निर्देश देते हुए अपने फैसले में यह अहम बात कही। इस मामले में महिला ने दावा किया कि शादी के समय उसके परिवार ने उसे 89 सोने के सिक्के उपहार में दिए थे। साथ ही शादी के बाद उनके पिता ने उनके पति को दो लाख रुपये का चेक दिया था।

महिला ने क्या कहा?

महिला के अनुसार, शादी की पहली रात उसके पति ने सभी गहने अपने कब्जे में ले लिए। गहनों को सुरक्षित रूप से सहेजने के नाम पर उसने गहने अपनी मां को दे दिए। महिला के आरोप के अनुसार, पति और उसकी सास ने अपनी पुराने

कर्जों का निपटारा करने के लिए उसके गहनों का दुरुपयोग किया। मामला अदालत में पहुंचने के बाद फैमिली कोर्ट ने 2011 में पारित फैसले में महिला के आरोपों को सही पाया।

स्त्रीधन पत्नी और पति की संयुक्त संपत्ति नहीं: SC

कोर्ट ने पति और उसकी मां से उक्त दुरुपयोग से हुए नुकसान की भरपाई करने का निर्देश दिया। बाद में मामला केरल हाई कोर्ट पहुंचा। यहां कोर्ट ने पारिवारिक अदालत से मिली राहत को आंशिक रूप से खारिज कर कहा कि महिला पति और उसकी मां द्वारा सोने के आभूषणों की हेराफेरी को साबित करने में असफल रही। हालांकि, मामला जब सुप्रीम कोर्ट में पहुंचा तो शीर्ष अदालत ने कहा कि स्त्रीधन पत्नी और पति की संयुक्त संपत्ति नहीं है।

पति का नहीं है इस पर कोई नियंत्रण

पति के पास मालिक के रूप में ऐसी संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता। कोर्ट ने साफ किया कि किसी महिला को शादी से पहले, शादी के समय या विदाई के समय या उसके बाद उपहार में दी गई संपत्तियां स्त्रीधन संपत्तियां हैं। यह महिला की पूर्ण संपत्ति है। उसे अपनी खुशी के अनुसार इनका निपटान करने का पूरा अधिकार है। पति का इस पर कोई नियंत्रण नहीं है।

दक्षिणी दिल्ली में 2 करोड़ से ज्यादा रुपये डकार गए जालसाज, बरतें ये सावधानियां और ऐसे करें शिकायत

जालसाजों ने तीन महीने में दक्षिणी दिल्ली के निवासियों से दो करोड़ से ज्यादा रुपये की ठगी कर ली। लेकिन पुलिस जालसाजों के आकाओं तक नहीं पहुंच सकी। इस साल जनवरी से मार्च महीने तक तीनों जिलों के साइबर क्राइम थानों में जालसाजी के करीब 79 केस दर्ज किए गए। जालसाज वारदात के बाद अपने मोबाइल सहित अन्य संपर्क सूत्र को बंद कर देते हैं।

दक्षिणी दिल्ली। साइबर जालसाजों ने तीन महीने में दक्षिणी दिल्ली के निवासियों से दो करोड़ से ज्यादा रुपये की ठगी कर ली। आरोपितों ने पीड़ितों को अलग-अलग तरीकों अपना शिकार बनाया।

दक्षिणी, दक्षिणी-पश्चिमी और दक्षिणी-पूर्वी दिल्ली जिले की पुलिस ने एफआइआर तो दर्ज कर ली, लेकिन जालसाजों के आकाओं तक नहीं पहुंच सकी। जबकि ठगी का सिलसिला अभी भी जारी है।

जालसाजी के करीब 79 केस दर्ज

इस साल जनवरी से मार्च महीने तक तीनों जिलों के साइबर क्राइम थानों में जालसाजी के करीब 79 केस दर्ज किए गए। इन मामलों में जालसाजों ने पीड़ितों की दो करोड़ से ज्यादा रुपये की गाढ़ी कमाई ठग ली। आरोपितों ने किसी से 20 लाख तो किसी ने 50 लाख रुपये की ठगी की। इसके अलावा अन्य थानों में भी 10 से ज्यादा ठगी की एफआइआर दर्ज की जा चुकी है। अभी भी ऐसे मामले आ रहे है। ऐसे शातिरों की गिरफ्तारी करना भी पुलिस के लिए मुश्किल हो गया है। जालसाज वारदात के बाद अपने मोबाइल सहित अन्य संपर्क सूत्र को बंद कर देते हैं।

ऑनलाइन ट्रेडिंग और टास्क देकर सबसे ज्यादा ठगी

जालसाजों ने अधिकतर मामलों में ऑनलाइन ट्रेडिंग और टास्क देकर मोटा पैसा कमाने का झांसा देकर ठगी की है। तीन महीनों में सामने आए मामलों में 50 वारदातों को इसी तरह अंजाम दिया। वे ऑनलाइन ट्रेडिंग के नाम पर पीड़ितों से लाखों रुपये का निवेश करा लेते हैं। पैसे लेने के बाद अपना मोबाइल नंबर बंद कर देते हैं। इसी तरह ठग ऑनलाइन टास्क देकर पीड़ितों को पहले दो-तीन दिन तक दो से तीन हजार रुपये का मुनाफा देते हैं। फिर ज्यादा मुनाफा कमाने का लालच देकर उनसे लाखों रुपये फर्जी खातों में ट्रांसफर करा लेते हैं।

यहां करें शिकायत

ठगी का शिकार होने पर तुरंत 1930 पर काल करें। या फिर cybercrime.gov.in पर जाकर शिकायत दर्ज कराएं। इसके अलावा संबंधित साइबर क्राइम थाने में शिकायत की जा सकती है।

यह बरतें सावधानी

सबसे पहले लोन सैटलमेंट के लिए खुद ही बैंक से संपर्क करें।

सोशल मीडिया पर अपनी फोटो, वीडियो या वायस से जुड़े पोस्ट पर प्राइवेसी सेट करें, ताकि इसे कोई सेव या कॉपी न कर पाए।

अनजान नंबर से काल आए तो उठाने से बचें।

कोई भी व्हाट्सऐप काल करके ओटीपी मांगे तो साझा न करें।

अपने व्हाट्सऐप पर टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन या टू स्टेप वेरिफिकेशन लगाएं।

कभी भी दो से तीन मिनट तक मोबाइल में सिग्नल न आने पर अलर्ट हो जाएं।

ठग अलग-अलग तरीकों से खाली कर रहे लोगों का खाता

जालसाज आए दिन ठगी के नए नए तरीके निकाल रहे हैं। आरोपित विदेश में नौकरी दिलाने, कैश आन डिलिवरी कैंसिल कराने, बीमा पालिसी को दोबारा शुरू कराने, एआइ (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के जरिये, फिंगर प्रिंट क्लोन करके, बिजली के बिल, फर्जी वेबसाइट बनाकर, व्हाट्सऐप हैक कर रिश्तेदारों से मदद मांगने के बहाने, सिम स्वैपिंग, लोन की किस्त कम राशि में कराने, विदेश से उपहार व विदेशी मुद्रा भेजने और झूठी एफआइआर दर्ज कराने सहित अन्य बहानों से पीड़ितों के बैंक खाते खाली कर रहे हैं।

आरोपित और रकम नहीं आ पाती हाथ

ठगी के बाद न तो आरोपित जल्दी से पुलिस गिरफ्त में आते हैं और न ही पीड़ित को रकम वापस मिलती है। छतरपुर एन्क्लेव में रहने वाली एक युवती से ठगों ने छह अप्रैल को पांच लाख ठग लिए थे। पीड़िता का कहना है कि अभी तक आरोपित गिरफ्तार नहीं हुआ है न ही उन्हें पैसे मिले हैं। इसी तरह साकेत निवासी कुंदन से आनलाइन ट्रेडिंग के नाम पर 15 लाख ठगे गए।

साइबर ठगी से परिवार हों जागरूक

परिवार को साइबर ठगों से बचाने के लिए उन्हें बताना चाहिए कि अनजान नंबरों से किसी भी तरह के ऑफर में नहीं फंसना है। कोई भी व्यक्ति अगर आपसे ओटीपी या बैंक खाते से जुड़ी जानकारी मांगता है, तो उसे नहीं देना है।

मथुरा-आगरा नगर निगम को भारी पड़ी लापरवाही : 65 करोड़ का जुर्माना

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। एनजीटी के अध्यक्ष जस्टिस प्रकाश श्रीवास्तव की पीठ आगरा और मथुरा-वृंदावन में यमुना के प्रदूषण मामले में 65 करोड़ रुपये से अधिक का जुर्माना लगाया है. इस रकम का उपयोग यहां के पर्यावरण सुधार के लिए किया जायेगा.

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने आगरा और मथुरा के नगर निगमों पर 65 करोड़ रुपये से अधिक का जुर्माना लगाया है. एनजीटी ने कहा ये रकम नगर निगमों को तीन महीने के अंदर उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) को जमा करनी होगी. डॉ. संजय कुलश्रेष्ठ की याचिका पर ये आदेश जारी किया गया है.

एनजीटी के अध्यक्ष जस्टिस प्रकाश श्रीवास्तव की पीठ आगरा और मथुरा-वृंदावन में यमुना के प्रदूषण मामले में दो याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी. इसमें कहा गया कि संबंधित अधिकारियों की ओर से जल अधिनियम के प्रावधानों का घोर उल्लंघन किया जा रहा है. इस 65 करोड़ के जुर्माने की राशि का उपयोग आगरा, मथुरा और वृन्दवान में पर्यावरण सुधार के लिए किया जायेगा.

एनजीटी की बेंच ने कहा, यह मानने में कोई झिझक नहीं है कि यमुना नदी की जल पारिस्थितिकी की सुरक्षा और उसकी सफाई राज्य का दायित्व था, लेकिन इसमें वो बुरी तरह से फेल रहा. ट्रिब्यूनल ने कहा कि आगरा नगर निकाय ने भी सहमति के बिना स्थापित दो एसटीपी का संचालन करके अधिनियम का उल्लंघन किया है.

200 पन्नों के फैसले में, पीठ ने कहा कि दोनों स्थानों के नगर निगम और उनके सीवेज का संचालन करने वाली एजेंसियों ने निर्वहन को रोककर प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन किया है. आगे कहा गया कि संबंधित अधिकारियों की ओर से जल अधिनियम के प्रावधानों का घोर उल्लंघन है. इस मामले में वे परिणामी, निवारक, दंडात्मक और उपचारात्मक कार्रवाई के लिए उत्तरदायी है.

बेंच ने कहा यमुना नदी किसी दैवीय कार्य से प्रदूषित नहीं हुई है बल्कि लोगों ने इसे प्रदूषित किया है. इससे भी अधिक, अधिकारियों की लापरवाही, नदी के प्रति ईमानदारी, चिंता और श्रद्धा की कमी के कारण नदी इतनी ज्यादा प्रदूषित है. पर्यावरण मुआवजे की राशि का उपयोग आगरा, मथुरा और वृन्दावन क्षेत्रों में पर्यावरण के सुधार के लिए करेगा. जिसे केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की एक संयुक्त समिति द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023